पुरवा की शहनाई

कविता-संग्रह

लेखिका

बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक

के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN- 978-93-86716-13-2

के.बी.एस प्रकाशन

मुख्य कार्यालय :- 18/91-ए, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007
विहार कार्यालय :- 74, एस.के.फुटवेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301
उ.प्र. कार्यालय :- 26, प्रभात नगर, पीलीभीत रोड, बरेली - 243122
दूरभाष :- 9871932895, 9868089950, 7532868696
Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in
e-mail :- kbsprakashan@gmail.com

मूल्य : 300.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2017 © बिमला रावर सक्सेना

मुख्य आवरण :- बिमला रावर सक्सेना
मुद्रक :- सी.पी. प्रिन्टर नई दिल्ली

"PURWA KI SHEHNAI" Poetry
by Bimla Rawar Saxena

वैधानिक **चेतावनी** : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के विना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

बिमला दीदी के मन की आवाज़ है - पुरवा की शहनाई

भावना का एक दिन फ़ोन आया जब मैं ऑफ़िस में ड्यूटी पर था, 'हेलो सर!'

'हाँ, बोलो भावना।'

'सर छुट्टी के बाद जनकपुरी आ जाओ।' आदेश दिया था उन्होंने। अधिकार भी था और अपनत्व भी।

मैंने बिना नानुकुर किए हाँ कह दी और चला गया था जनकपुरी। बाद में पता चला कि मुझे बिमला दीदी के घर जाना है। घर पहुँचा। बिमला दीदी से पहली ही मुलाकात थी। मैंने उन्हें देखा तो मन ने अपने आप ही कह दिया, 'नहीं, ये बिमला रावर नहीं, ये बिमला दीदी हैं। छोटा सा कद, मासूम चेहरा, सहनशक्ति की सीमाओं से आगे, प्यार, स्नेह और ममता की साक्षात। बस दीदी कहने लगा। चरण स्पर्श किए तो लगा आशीर्वादों की बरसात हो गई हो। उसी दिन से पहली ही मुलाकात में वे मेरी दीदी हो गईं। मेरी विजय दीदी की तरह। ये अलग बात है कि दीदी इसे स्वीकार न करें।

'जो जोड़ें दिलों को वो रिश्ते कहाँ हैं
ये रिश्ते तो कौड़ी में बिकते यहाँ हैं।'

नहीं दीदी, कौड़ी के मोल बिकते होंगे रिश्ते, फिर वे रिश्ते थोड़े ही हुए। वह तो व्यापार है और साहित्यकार बनिया नहीं होता। वह तो खाली हाथ होता है लेकिन उसकी झोली प्यार, ममता, अपनत्व और विश्वास से भरी होती है। आप से पहली ही मुलाकात में मैं मालामाल हो गया। आपकी स्नेह की पोटली मैंने संभाल कर रख ली है दीदी।

सच बताएं आपके व्यक्तित्व में एक निश्छलता है और वही निश्छलता लोगों को अपना बना लेती है।

'उसकी आँखों में झाँकती एक निश्चल सच्चाई है'

सही अर्थ में देखें तो दीदी का व्यक्तित्व ही उनकी कविता है, कविताएं हैं, कविता संग्रह है या फिर उनका समग्र साहित्य ही उनका व्यक्तित्व है। नहीं तो वे ऐसे क्यों लिखती-

'मन में जगा गई कुछ सोए सपने
यादों में झाँक गए कुछ खोए अपने।'

दीदी, कविता करती हैं तो मन से करती हैं। कविता भी जीती हैं, उसे

साक्षात करती हैं। वे साहित्यिक अय्याशी नहीं करतीं। न ही वे लिखने के लिए लिखती हैं। उनका मन उन्हें कहता है कि लिखो और तब भी मन के हाथों मजबूर हो लिखने लगती हैं मानो मन पर उनका ज़ोर ही न हो।

'जंगल जंगल मंगल छाया
मन पे किसी का रहा न ज़ोर।'

पुरवा की शहनाई, दरअसल बिमला रावर सक्सेना अर्थात् बिमला दीदी अर्थात् प्यारी सी दीदी, का बेहतरीन कविता संग्रह है जिसमें रिश्तों की बुनावट, प्यार, अपनत्व, प्रकृति चित्रण से लेकर जीवन का यथार्थ तक समाया हुआ है। भाषा सरल, सहज और जनसामान्य की है। उदाहरणार्थ-

'देखो कारी बदरिया आई
मनभावन अँधियारी छाई
जंगल जंगल मंगल छाया
कूकी कोयलिया नाचे मोर।'

पढ़ते समय लगता है मानो सावन का महीना हो। मोर नाच रहे हों। साक्षात चित्रण। कई बार तो लगता है वे आज की कविता नहीं कर रही हैं। वे तो छायावादी कवयित्री हैं। उनकी कविताओं में छायावाद है- प्रसाद, पंत, निराला की परंपरा को आगे ले जाने वाली बिमला दीदी का यह साहित्य के लिए धरोहर है।

विश्वास रखूंगा कि दीदी के ऐसे ही अन्य कविता-संग्रह आएं और हम सभी उनसे कुछ सीख लें।

मुझे नहीं पता मेरा आकलन पुरवा की शहनाई पर ठीक रहा या मैं दीदी को सही से जान पाया लेकिन मन तो उन्हें अपने समय की सर्वोत्तम कवयित्री मान रहा है और मन से ऊपर कुछ नहीं है। शेष तो आप सभी पढ़ कर निर्णय देंगे। विश्वास है मुझसे सहमत रहेंगे, इसी के साथ आपका ही तो-

डॉ. पूरन सिंह
असि. डायरेक्टर, कृषि मंत्रालय
240 बाबा फरीद पुरी, वेस्ट पटेल नगर,
नई दिल्ली-110008

पुरवा की शहनाई

कवयित्री बिमला रावर सक्सेना जी की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कविताओं को पढ़ते हुए यह लगता है कि जैसे वे जीवन को लिख रहीं हैं। उनकी कविताओं में वाकई जीवन का शब्दांकन है। फिर वह चाहे प्रकृति हो, परिवार हो या उनके अपने अनुभवों से उपजी कविता हो। सब से अहम बात होती है अपने भावों की अभिव्यक्ति, जो कि इन रचनाओं में बहुत सुन्दरता से हुई है। जिस प्रकार भावों की कोई निश्चित दिशा नहीं होती उसी प्रकार सोच की भी कोई दिशा नहीं होती। उनकी कविताओं को गुनगुनाया भी जा सकता है। यह एक बड़ी खासियत है कवयित्री बिमला रावर सक्सेना जी की।

'काश कोई देवदूत बदल सके समाज को
एक बार ला सके धरा पे रामराज को
दमन करे बुराई का भला बना दे आज को
भविष्य को सँवार दे मिटा बुरे रिवाज़ को
भारती के लाल कोई आओ इंतज़ार है
दीन दुखी जन के दर्द की पुकार है'

इन पंक्तियों में उनकी चिंता और अभिलाषा के दर्शन होते हैं समाज के प्रति। हम में से हर कोई ऐसी ही सोच रखता है अपने वर्तमान समय में। यही कारण है कि कवयित्री बिमला रावर सक्सेना जी की कवितायें एक बार पढ़ना शुरू करें तो पाठक पढ़ते हुए उनमें डूबता चला जाता है।

इस काव्यसंग्रह की शीर्षक कविता 'पुरवा की शहनाई' प्रकृति के मन बहलाने वाले रूप का वर्णन करती है। वे हवा से इस प्रकार बात करती हैं कि उन्हें हवा का बहना भी शहनाई की तरह प्रतीत होता है।

'ठिठक गई पल भर जो मीठी पुरवाई
कानों में बाज उठी मीठी सी शहनाई
सरक सरक पेड़ों के बीच से जो आई
मीठी सुगन्ध साथ उनकी चुरा लाई'

हवा की महक को महसूस करना कवयित्री बिमला रावर सक्सेना जी खूब जानतीं हैं। यह उनके पचहत्तर से अधिक वसंतों को देखने के कारण है। हर कविता में उनका एक अलग दृष्टिकोण समाहित रहता है। जीवन के सन्दर्भ में उनकी एक रचना की ये पंक्तियाँ देखें :-

'धुंधले पड़े रिश्तों की धूल
कोमल स्पर्श से साफ कर दो
अपने से समझौता करके
अपनों को माफ कर दो'

यही तो मूल मन्त्र है जीवन का और जीवन की खुशियों का। हम मानव हैं और अपने दैनिक व्यवहार में अनेक बार गलतियाँ कर बैठते हैं। ऐसे में क्षमा मांग लेना या क्षमा कर देना जीवन को बहुत सरल कर देता है। ये पंक्तियाँ अपने में जीवन का सार समेटे हुए हैं।

बचपन सबका प्रिय समय होता है और उसके बारे में वे लिखती हैं :-

'कहाँ खो गया मेरा बचपन
कहाँ खो गई सखी सहेली
अब तो जीवन उलझा धागा
बना हुआ है एक पहेली'

सच है न यह। जीवन सभी का ऐसा ही है और गुजरा हुआ। अच्छा समय हम सभी को याद तो आता ही है। फिर बचपन और अपने बचपन के दोस्त हम कहाँ भूल पाते हैं, वे तो हमारी स्मृति में सदैव के लिए अंकित हो जाते हैं, जिन्हें याद कर के हम अनायास मुस्कुरा उठते हैं।

हर व्यक्ति के जीवन में दुःख और पीड़ा भी अनिवार्य रूप से रहती है, कवयित्री बिमला रावर सक्सेना जी का जीवन भी इससे कैसे अछूता रह सकता है! वे अपनी पीड़ा को और जीवन जीने को कुछ इस तरह बयान करती हैं :-

'पहले तो आदमी मौत से ही मरता था
आज तो आदमी को ज़िन्दगी ने मारा है
खुशियाँ या ग़म ज़्यादा या कम
इसी हेर फेर में ज़िन्दगी से हारा है'

आप ने जीवन की निष्ठुर सच्चाई को कुछ इस तरह से शब्दांकित किया है :-

'दिये जिसने हैं आँसू
मेरी आँखों में
वही भोली शक्ल से पूछता है
बता तेरे रोने का सबब क्या है?
भरे हैं जिसने ये सारे ज़ख्म
मेरे सीने में
वही मासूमियत से पूछता है
बता तेरे ज़ख्मों की दवा क्या है?'

अनेक जगह कवयित्री बिमला रावर सक्सेना जी अपनी आपबीती को कविताओं में पाठकों के सामने रखती हैं :-

'ये ज़िन्दगी तो मेरी
अपनी सलीब है
खुद ज़ख्म जो किये हैं
भरना है खुद उन्हें
ये ज़िन्दगी भी यारों
कितनी अजीब है'

सभी कविताओं में जीवन का शब्दांकन है और जीने की राह, आह, खुशी और दर्शन मौजूद हैं। कवयित्री बिमला रावर सक्सेना जी को मैं अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ और कामना करता हूँ कि वे स्वस्थ रहें और उनका स्नेह आशीर्वाद सदैव मुझ पर बना रहे।

भवतु सर्व मंगलम्

केदारनाथ 'शब्दमसीहा'
मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक,
रेल डिपो कार्यालय, दिल्ली
कवि एवं लेखक

दो शब्द मेरी ओर से...

मेरी रचनाएं मेरी वैयक्तिक, अंतरंग अनुभूतियों, भावात्मक प्रतिक्रियाओं तथा सामाजिक प्रेरणाओं से प्रस्फुटित हुईं। लेखक साहित्य की किसी भी विधा में लिखें, उसके लेखन में सबका सुख-दुख प्रतिबिंबित होता है। वास्तव में घायल की गति घायल जाने या "वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान"। एक लेखक का हृदय दूसरे के सुख-दुख को अनुभव करके, अपना समझकर लिखता है। अपनी अंतरंग अनुभूतियों को सबकी अनुभूतियों के साथ मिलाने से जो एक रचना उसके हृदय से प्रस्फुटित होती है उसमें सबको अपने सुख-दुख के पलों की अनुभूति होती है तो रचनाकार की रचना सफल होती है। जीवन के लंबे वर्षों में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसे लम्हे अवश्य आते हैं जो दूसरों को भी अपने जीवन में आए लम्हों जैसे लगते हैं और उन्हीं लम्हों को एक लेखक की कलम कागज़ पर उकेरकर सब के सुख दुख को अपना लेती है।

यदि मेरा नया संकलन 'पुरवा की शहनाई' पाठकगण के हृदय को छू सकेगा तो मुझे भी प्रेरणा मिलेगी। पुस्तक में मेरे पिछले छः दशकों की रचनाएं सम्मिलित हैं। आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

अपने अनुज, मित्र, पथ प्रदर्शक, बन्धु केदारनाथ 'शब्दमसीहा' को स्नेह और आशीष सहित धन्यवाद देती हूँ। उनकी लिखी पंक्तियों की प्रतीक्षा मेरे प्रत्येक संकलन को उत्सुकता से रहती है।

प्रिय बन्धु डॉ. पूरन सिंह जी की मैं अत्यंत आभारी हूँ कि उन्होंने अपने व्यस्त क्रियाकलापों में से समय निकालकर मुझे प्रेरक और प्रोत्साहित शुभकामनाओं द्वारा अनुगृहित किया। मेरा उन्हें हार्दिक धन्यवाद।

प्रियवर एस.जी.एस. सिसोदिया जी ने मेरी पुस्तक 'गुनगुनी धूप

सी यादें' में मेरी कविताओं के विषय में जो भी लिखा था वह मानो मेरे हृदय का मंथन था। मेरे हृदय को उन्होंने पढ़ लिया था। मैं उन्हें आशीष सहित धन्यवाद देती हूँ।

के.बी.एस. प्रकाशन दिल्ली के प्रकाशक श्री संजय शाफ़ी तथा प्रिय भावना को उनके सहयोग एवं परिश्रम के लिए हृदय से धन्यवाद देती हूँ। वे निरन्तर आगे बढ़ते रहें।

बिमला रावर सक्सेना
बी-45, न्यू कृष्णा पार्क,
धौली प्याऊ, नई दिल्ली-110018
दूरभाषः- 011-25533221

अनुक्रमांक

01	भारती के लाल कोई आओ	17	24	हमको बनना है इन्सान	41
02	पुरवा की शहनाई	18	25	मेरे लिए ऋतुराज तुम	42
03	बोलती आँखें	19	26	क्षितिज और मैं	43
04	धूल छँट जाएगी	20	27	होंठ सिल जाते हैं	44
05	हर दिशा सुनसान है	21	28	दर्द सच्चे मीत	45
06	गहराता शून्य	22	29	अपनी जेल	46
07	प्रभु ने कहा	23	30	बादल और धरती	47
08	साठे सो पाठे	24	31	झूलती चाँदनी	48
09	मोती सी बूँद पड़ी	25	32	भगवान के बाज़ार	49
10	बिखरते स्वप्न	26	33	सृष्टि चलती रहेगी	50
11	प्रेम के बीज	27	34	कहाँ है वो निर्दयी	51
12	कवि की वाणी रस घोल गई	28	35	मेरे मन का हिंडोला	52
13	अधूरे स्वप्न	29	36	दिल चीरने वाले नारे	53
14	मेरा संघर्ष	30	37	चाँद की चाँदनी	54
15	प्रश्नों के अम्बार	31	38	नये जनम में	55
16	तुष्टि और तृषा	32	39	राधा गोपाल	56
17	जीवन तो चलता रहता है	33	40	स्वप्नो का जाल	57
18	लोकगीतों में बेटी का दर्द	34	41	जीने का साधन	58
19	हैरानगी है	36	42	सुलझा जवाब	59
20	दर्द का फ़साना	37	43	ज़िंदगी के साज़	60
21	खुल गई गाँठ तो	38	44	ज़िंदगी के साज़	61
22	तू ही दीनबंधु	39	45	वह चुप है	62
23	उसके इंगित पर नाचगे	40	46	पत्थर दिल न पिघले	63

47 अच्छा वर्तमान 64
48 मेरी खामोशी ने 65
49 ये कैसा दोराहा 66
50 कहानी रोटियों की 67
51 कितनी कहानियाँ बोलती 68
52 ज़िंदगी ही हारी 69
53 वो लड़की 70
54 बीत गया एक और वर्ष 71
55 अनचाही चुप्पी 72
56 यादों की समाधि 73
57 ज़िंदगी ने मारा है 74
58 गीतों की दौलत 75
59 एक और तारा 76
60 नीरवता 77
61 कुछ ठाना है 78
62 झर आई आँख 79
63 एक कली 80
64 मक़्सदों के घेरे 81
65 फूली सरसों 82
66 साथ-साथ सहगे 83
67 इससे पहले कि 84
68 अतीत की दस्तक 85
69 इसी को नीद कहते हैं 86
70 रिश्तों के फूल 87
71 कबीर का सच 88
72 चँद पंक्तियाँ 89
73 छूटते सम्बल 90
74 दे अपनी रहमत मुझको 91
75 आहट तुम्हारी 92
76 कुछ फ़र्ज़ कुछ कर्ज़ 93
77 नेमत है तनहाई 94
78 ज्योतित 95
79 पल में एक नया पल 96
80 क्या है जवाब इसका 97
81 मुश्किलों को सुलझाकर 98
82 कैसी आधुनिकता 99
83 शायद बात बन जाती 100
84 वह चतुर चितेरा 101
85 कितना अजीब है 102
86 सौ-सौ दिये प्यार के 103
87 तुम्हारे लिये 104
88 वो दर्द 105
89 हमदर्द 106
90 दिल से दिल तक 107
91 बन्धु 108
92 बस वही इन्सान है 109
93 है नही ऐसा सितारा 110
94 पूजा का पुण्य 111
95 जीने की आरज़ू में 112
96 एक दिन का लेखा 113
97 कितनी बेबसी 114
98 किसको..... 115
99 अनोखे दर्द 116
100 सारी ज़िंदगी 117

101	मुसकाई सारी दुनिया	118
102	विना खिवैया कैसी नैया	119
103	कोई तो बतलाये हमें	120
104	आवाज़ प्यार की	121
105	बदल जाते हैं सब	122
106	अहसास हुआ रूहानी	123
107	कैसे मनाऊँ बता दो	124
108	कभी न डरना दुनिया से	125
109	न तुम करुणा दिखाओ	126
110	सहते रहगे ताउम्र	127
111	प्यासी धरती मुसकाई	128
112	वो रिश्ते कहाँ हैं	129
113	रोज़ एक आज.....	130
114	आस-विश्वास और लक्ष्य	131
115	वक़्त अपने निशाँ छोड़ता	132
116	अपना ही दिल है दुशमन	133
117	टूटी बाँस की बाँसुरिया	134
118	हमारा आज	135
119	तू कहाँ सो रहा है?	136
120	जाने दिलवाला	137
121	जीवन के साझेदार	139
122	ये दो आँखें	142

भारती के लाल कोई आओ

काश कोई देवदूत बदल सके समाज को
एक बार ला सके धरा पे रामराज को
दमन करे बुराई का भला बना दे आज को
भविष्य को सँवार दे मिटा बुरे रिवाज़ को
भारती के लाल कोई आओ इंतज़ार है
दीन दुखी जन गण के दर्द की पुकार है
फिर हमें न कहना पड़े, नहीं है यह ज़िंदगी

काश कोई वीर जो बचा ले अपने देश को
कोई जो बना दे विश्व में महान देश को
कोई जो बदल दे समाज के परिवेश को
या कोई भक्त जो बुला दे अवधेश को
कर दो बुराई का अंत मेरे देश से
रावण को ख़त्म कर दो प्रभु मेरे देश से
बुराई पर अच्छाई की विजय सीखें जन देश के
प्रभु के पदचिन्हों पर चलें वीर देश के
वरना यह कहना पड़ेगा, नहीं है यह ज़िंदगी

पर न चाहें हम कभी भी ऐसा हो इस देश में
लोग कहें बहुत रहे अब न रहें इस देश में
बन्धु कुदरत ने बहुत कुछ दिया है मेरे देश को
खनिज पदार्थ, उर्वरा धरा, गंगा यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि नदियाँ देश को
इनका सदुपयोग कर समृद्ध करो अपने देश को
हाथ न फैलाना पड़े किसी के आगे देश को
अनगिनत विद्वान बुद्धिमान मेरे देश में
धरा अमीर देश की तो सब कुछ है देश में
अब कभी न कहना तुम, नहीं है यह ज़िंदगी

***

पुरवा की शहनाई

ठिठक गई पल भर जो मीठी पुरवाई
कानों में बाज उठी मीठी सी शहनाई
सरक-सरक पेड़ों के बीच से जो आई
मीठी सुगन्ध साथ उनकी चुरा लाई
खट-खट खटखटा गई द्वार मेरा आकर
लौट गई धीमी सी बाँसुरी बजा कर
मन में जगा गई कुछ सोये सपने
यादों में झाँक गये कुछ खोये अपने
खेत की मचान पर गा-गा कर बिरहा
कह दिया गीत में जो अब तक था अनकहा
पुरवा ने अन्तर की परतों की चादर सरकाई
घुल गई हवाओं में वो बात सारी जो अब तक लुकाई
दूर पार से आकर मौसम चले गये
ठुमक कर ठिठक गई मीठी पुरवाई

***

बोलती आँखें

क्या तुमने कभी
उसकी आँखों को पढ़ा है
क्या तुम्हें नहीं लगता कि उन आँखों में
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ख़जाना गड़ा है
मैंने हाँ या न से अधिक
उसके मुख से नहीं सुना
न कभी उसने अपने आस-पास
शब्दों का मायाजाल बुना
पर उसकी आँखों ने मुझे अनगिनत कथायें सुनाईं हैं
न जाने कितने सागरों की गहराई उन आँखों में समाई है
उसकी आँखों से झाँकती एक निश्छल सच्चाई है
उसकी उठती गिरती पलकों ने न जाने
कितनी बातें सुनाईं और कितनी छिपाई हैं
उसकी आँख में झिलमिलाई एक बूँद में
नज़ारा देखा है सावन भादों का
उसकी आँखों के शून्य में देखा है
एक विस्तृत शुष्क रेगिस्तान, दर्दीली यादों का
उसका हृदय हर अनुभव हर अहसास
हर दर्द भरा उच्छ्वास
उसकी दृष्टि में दृष्टिगत होते हैं
उसकी आँखों के नैराश्य से
मेरे अन्तर के तार भी व्यथित होते हैं
पर जब कभी उसकी आँखों में
आशा की किरण क्षणभर को लहराई
मुझे लगा जैसे सम्पूर्ण सृष्टि
गद्‌गद् हो मुस्कुराई

***

धूल छँट जायेगी

धुँधले पड़े रिश्तों की धूल
कोमल स्पर्श से साफ कर दो
अपने से समझौता कर के
अपनों को माफ़ कर दो
ठंडे पड़े रिश्तों में ऊष्मा भरो
गुनगुनी धूप को आने दो
अँधेरों को दूर करो
रौशनी को आने दो
उदासियों-वीरानियों से रिश्ता तोड़ लो
नया खुशगवार माहौल बना लो
आँखों में नई चमक भर लो
अपनों के दिल तक रास्ता बना लो
दिल से दिल की राह बन जायेगी
तो रिश्तों में पड़ी धूल छँट जायेगी
सुख दुःख की धूप और चाँदनी
आपस में बँट जायेगी
दुःख कम होगा सुख बढ़ेगा
नेह भरे रिश्तों का सूरज
आकाश तक चढ़ेगा

***

हर दिशा सुनसान है

दीप अनगिन हैं जलाये
पर तिमिर घटता नहीं
कौन सी लायें किरण अब
तिमिर क्यों छँटता नहीं
कैसा उपवन है जहाँ पर
फूल मुसकाते नहीं
देख फूलों की उदासी
भ्रमर भी गाते नहीं
क्षितिज तक न राह कोई
हर दिशा सुनसान है
कौन सा कोना जहाँ पर
सिर्फ वीरानी नहीं
जंगलों में, पर्वतों पर
देश में, परदेस में
शून्य हर वातावरण में
शान्ति क्यों मिलती नहीं
क्या ये मेरी कल्पना है
या कमी कुछ सृष्टि में
क्या है कुदरत ने किया कुछ
या मेरी दृष्टि ही नहीं

***

गहराता शून्य

मैं भुला दूँ स्वत्व को
या मिटा दूँ अस्तित्व को अपने
भूल जाऊँ ज़िंदगी में
देखने चाहे थे कुछ सपने
या कभी खुशी के कुछ पल चुराकर
अपनी झोली भरनी चाही थी
या कभी काँटों से भी
दोस्ती करनी चाही थी
लेकिन मेरी फटी झोली में से तो
फूल और काँटे सभी निकल गए
रह गया सिर्फ एक शून्य
दूर
क्षितिज तक जाता
गहराता शून्य
केवल शून्य

***

प्रभु ने कहा

गीता में प्रभु ने कहा, करता चल तू काम
फल की इच्छा त्याग दे, तब पायेगा नाम
तब पायेगा नाम, जगत में सुख पायेगा
करे अगर विपरीत, सदा ही दुख पायेगा ।।1।।

जो बोया काटे वही, यही भाग्य की बात
अच्छा बोये सुख मिले, बुरा बोये आघात
बुरा बोये आघात मिले, सब कुछ लुट जाये
अपने और पराये सबका संग छुट जाये ।।2।।

मन की माने जो सदा, बने न उसकी बात
जो बुद्धि से काम ले, वह पाये सौगात
वह पाये सौगात, जगत में नाम कमाये
बुद्धि का बल सर्वश्रेष्ठ, सबको समझाये ।।3।।

चाकी के दो पाट में, दब कर सब पिस जाये
बूँद-बूँद से घट भरे, बूँद-बूँद रिस जाये
बूँद-बूँद रिस जाये, कूप को कर दे रीता
करे जो संचय बूँद-बूँद, जग उसने जीता ।।4।।

जीवन सुख शैया नहीं, जीवन है संघर्ष
आलस में अपकर्ष है, मेहनत में उत्कर्ष
मेहनत में उत्कर्ष, मनुज सुख शैया पाये
और आलसी तो जग में, दुख भैया पाये ।।5।।

***

साठे सो पाठे

स्वतन्त्रता के बाद हमारे देश में
राजकीय व्यवस्था समाप्त हो गई
राजा लोग तो राजा नहीं रहे
लेकिन लोकतन्त्र में
राजाओं की एक नई प्रजाति ने जन्म लिया
पंचायत राज से शुरु हो कर
हर सीढ़ी के राजा का अपना-अपना कुँआ होता है
सब अपने-अपने कुँओं में टर्राते रहते हैं
और स्वयं को चाणक्य का अवतार समझते हैं
राजनीति की जलेबी जैसी ही नहीं
अपितु इमरती जैसी गोल गोल उलझनों में
जनगण ही नहीं अपितु राजनीतिज्ञ भी
उलझ कर रह जाते हैं
जितना निकलना चाहते हैं उतना फँसते हैं
जब लोग उन पर हँसते हैं
कि वे जनता के लिये कुछ नहीं करते हैं
तब वे कुछ समय के लिये अपने साम्राज्य में छुप कर
ज़ोर-ज़ोर से टर्राते हैं
फिर स्वयं को चाणक्य समझ कर उभरते हैं
यह क्रम लम्बे समय तक चलता रहता है
फिर जब साठ वर्ष की आयु में सरकारी सेवा के बाद
सरकारी नौकर सेवानिवृत्त होते हैं
उस उम्र में साठे सो पाठे नेता, बन कर अध्येता
अपनी ट्रेनिंग पूरी करके जम कर कुर्सी पर बैठ जाते हैं
क्योंकि उनकी सेवानिवृत्ति की कोई आयु सीमा नहीं होती
वे सदैव युवा रहते हैं और बिना किसी पढ़ाई प्रमाण पत्र के
कुर्सी के बल पर देश सेवा करते हैं

***

मोती सी बूँद पड़ी

मोती सी बूँद पड़ी रिमझिम बरसात आई
गाया मेघ मल्हार राग सरगम की बात आई
घन-घन घनघोर घिरे घनी-घनी रात आई
सरस-सरस सरसी धरा बरखा सौगात लाई
रिमझिम ने छम-छम ने मन बगिया सरसाई
हो गये उदार मेघ मूसलाधार बरसाई
दूर कहीं बिरहिन की अँखियाँ भी भर आईं
बरखा ने अलग-अलग अपनी छटा दिखलाई
महलों के लिये वर्षा बन कर त्यौहार आई
झोंपड़ी की छत से टपक-टपक दुख लेकर आई
कैसी विडम्बना वर्षा तो एक ही है
फिर कहीं सुख कहीं दुख क्यों लेकर आई
वर्षा ने धरा में सोंधी सुगन्ध महकाई
माटी की मीठी गन्ध तन-मन में लहकाई
डाल-डाल पात-पात हरियाली लहराई
इन्द्रधनुष ने नभ में सतरंगी चूनर फहराई
कुछ बिजली चमकी, कुछ बादल गरजे छम-छम आवाज़ आई
मोती सी बूँदें पड़ीं रिमझिम बरसात आई

***

बिखरते स्वप्न

आज मत हँसना निरख कर अश्रु मेरे
बहुत से थे स्वप्न,
जो झरकर, बिखर कर-
गिर गए हैं
क्यों अतीत बुला रहा है
क्यों दिखाते आज नर्तन दिन पुराने
प्रश्न का उत्तर कठिन है
भूलने में हूँ विवश मैं
गत ज़िंदगी के दिन सुहाने
आज मन के कोष्ठकों में
बहुत से बादल-
विगत की याद ले कर घिर गए हैं
देखती चारों तरफ़
वे ही बहारें हैं
कभी पहले मुझे जो थीं रिझाती
किन्तु दृष्टि आह मेरी ही-
बदल शायद गई है
आज लगती हैं सभी
मुझको खिझाती
क्या करूँ इस नासमझ अर्न्तजगत में
दिवस गत के क्यों अचानक-
तिर गए हैं
आज मत हँसना निरख कर अश्रु मेरे
बहुत से सपने छिपे थे
जो अचानक गिर गए हैं

***

प्रेम के बीज

रिश्ते तो बहुत से थे
पर समय की परतों में खो गये
कुछ को भगवान ने सुला दिया
कुछ जीते जी सो गए
अपने तो अपने होते हैं
नाखूनों से माँस जुदा नहीं होता
क्या ये सिर्फ कहावतें हैं
क्या इनमें कोई सार नहीं होता
शायद वो अपने थे ही नहीं जो गये
दिल पर जो गुज़रती है
वो दिल ही जानता है
ये दिल और की सुनता भी तो नहीं
बस अपनी ही मानता है
इसी लिये तो कभी खोये को
कभी सोये को याद कर-कर के रो गये
कभी दिलों से दिलों तक बनाये गये रिश्ते
भगवान के बनाये रिश्तों को भी पीछे छोड़ देते हैं
उनकी छोड़ी गई निशानियाँ
बन जाती हैं मीठी-मधुर कहानियाँ
ऐसे लोग जनम-जनम के लिये
प्रेम के बीज बो गये
उनके किस्से समय की परतों के नीचे
नहीं खो गये
वे सदैव के लिये अमर हो गये

***

कवि की वाणी रस घोल गई

जो बात मेरे दिल से निकली
वो मेरे गीतों में ढल गई
हर साँस-साँस बन गीत गई
हर साँस गीत बन के छल गई
मेरी हर अनुभूति ने जैसे खुद का रूप बदल डाला
मेरे हर रिश्ते ने जैसे हो धड़कन पर डाका डाला
हैं सभी मेरे कितने अपने
दिल की धड़कन आ कर कह गई
दिल ने जो कहा समझा मैंने
पर कुछ न कहा चुप से सह गई
मेरे गीतों की मधुर धुनें सुन-सुन कर जन-जन नाच उठा
सबने कितने ही स्वप्न बुने हर जन गीतों को बाँच उठा
स्वप्नों में आ कर अपनों की
अनजाने में आँखें बह गई
गीतों की लय पर थिरक उठे, सृष्टि के कण-कण महक गये
बादल भी सुन कर झूम उठे, धरती अम्बर सब निखर गये
सबके अन्तर ने यही कहा
कवि की वाणी रस घोल गई
वो बात हमारे मन की थी
हमने ये सब कहना चाहा
पर कहने की ताकत न थी
कवि के दिल से जो भी निकला
उसमें सब की वाणी घुल गई
जो बात कवि के दिल से निकली
वो कवि के गीतों में ढल गई

***

अधूरे स्वप्न

सपने क्यों रहे अधूरे
कितने अरमान सँजोए
कितनी आशायें लगाईं
युग-युग के दृश्य समेटे
नयनों में प्रीत सुहाई
इन छिन्न हुए चित्रों को
हा अब मैं कहाँ धरुँ रे

सँभली मैं पग-पग पर ही
न गिरने का प्रण ठाना
इस अन्धी पगडण्डी पर
कब गिरी रहा अनजाना
कर्त्तव्यविमूढ़ हुई मैं
किस पथ की मीत बनूँ रे

कैसी यह रीति दुनिया की
कैसे विधान विधना के
कोमल कलिका मुरझाए
स्वप्नों के हार बना के
किस-किस की घृणा सहूँ और
किस-किस को प्यार करुँ रे

इस तृषित चातकी को अब
हे प्रभो स्वाति का जल दो
सबके आघात सहूँ पर
न डिगूँ विभो वह बल दो
जिस पथ की बनी पुजारिन
उस पथ से नहीं डरुँ रे
सपने क्यों रहे अधूरे

***

मेरा संघर्ष

दो वर्ष पूर्व निकला था मेरा
बी.ए. का परीक्षा परिणाम
माता-पिता ने मिठाई बाँट कर
सबमें मशहूर कर दिया मेरा नाम
बड़े अच्छे अंक लाया है लाल हमारा
अब तो मिट जायेगा घर का जंजाल हमारा
बूढ़े होते माता-पिता को मिलेगा सहारा
बेटा तो है सचमुच होनहार हमारा
इसके बाद शुरू हुई नौकरी की तलाश
माँ रहने लगी हरदम उदास
कब बेटे को नौकरी मिलेगी कब घर की काया पलट होगी
घर में चार पैसे आयेंगे तो हमारे दिन फिर जायेंगे
भर्ती के दफ़्तर, हर तरह की नौकरी के दफ़्तर
दिन-दिन भर लगते थे चक्कर
घूमते-घूमते घिस गये जूतों के तले
जेब के छेद से न जाने कितने पैसे निकले
हर शाम घर आ कर माँ को 'न' कहना
आँखें झुका कर खुद को मुजरिम सा समझना
छोटे भाई-बहनों की आँखों में आई
सुबह की चमक का शाम को बुझ जाना
सबकी उमंगों का मन ही मन घुट जाना
नहीं जानता कब तक चलेगा यह क्रम
कहीं टूट कर न रह जाये नौकरी का भ्रम
क्या कभी उत्तर मिलेगा मेरे जीवन मरण के इस प्रश्न का
क्या कभी अन्त होगा मेरे संघर्ष का

***

प्रश्नों के अम्बार

बैठे कुर्सी पर हम अपनी पढ़ रहे अख़बार थे
मन में कुछ नये कुछ पुराने ढेर से विचार थे
हो गया क्या आदमी को, आदमी को खा रहा
न सुने औरों की बस वह गीत अपने गा रहा
कितना लालच, स्वार्थ कितना आदमी में आ गया
गीता रामायण भुला कर क्या उसे है भा गया
सभ्यता और संस्कृति सब नष्ट होती जा रहीं
कौन सी ये लालसायें सबमें भरती जा रहीं
कैसी-कैसी ख़बरे हैं ये छप रहीं अख़बार में
रिश्वतें, अनाचार, अत्याचार, दुर्व्यवहार या बलात्कार है
हो रहा है समाज में यह कौन सा व्यवहार है
क्या हमारे हृदय को सचमुच ये सब स्वीकार है
आदमी की बुद्धि पर क्यों छा गया अँधकार है
तोड़ कर रिश्तों की मर्यादा ये सब क्या हो रहा
आदमी का ज़मीर कुम्भकर्णी नींद में क्यों सो रहा
आदमी के हृदय में क्यों कलुष इतना भर रहा
आत्मा को मार कैसे आदमी है जी रहा
छोड़ कर अमृत, घटक का ज़हर क्यों है पी रहा
मेरे मन में प्रश्नों के ये ढेर से अम्बार थे
बैठे कुर्सी पर हम अपनी पढ़ रहे अख़बार थे

***

तुष्टि और तृषा

प्यार यदि न दे सको तो घृणा दे दो
तुष्टि यदि न दे सको तो तृषा दे दो
कल्पना सुख की कोई अपराध है क्या
पढ़ न पाई दार्शनिकता यह तुम्हारी
स्वप्न मेरे चूर हो जायें अगर तो
क्या नहीं होगी निठुरता यह तुम्हारी

विरह में ही पूर्णता है प्रेम की बस
समझ न पाई तुम्हारे इस कथन को
वास्तविक सुख खोजते हो तुम अगर तो
श्रेष्ठतम ही मानती हूँ मैं मिलन को

यदि न मानो तर्क मेरे बन्धु मेरे
तो मुझे दो प्यार का आधार इतना
हास यदि न दे सको तो रुदन दे दो
यदि न शीतल कर सको तो जलन दे दो

तुम मुझे अपना न समझे भाग्य मेरा
क्या करूँ कोई शिकायत आज तुमसे
मैं ऋणी हूँ दर्द जो तुमने दिया है
छीन न लेना इसे भी आह मुझसे

जानते अति क्षुद्र से भी क्षुद्र जन हूँ
क्या करूँगी मैं भला समता तुम्हारी
किन्तु बन्धन मोह का होता कठिन है
तज नहीं पाता हृदय ममता तुम्हारी

हृदय पर अधिकार यदि न दे सको तो
चरण रज दे कर करो उपकार इतना
शाँति यदि न दे सको अवसाद दे दो
नेह यदि न दे सको आघात दे दो

***

जीवन तो चलता रहता है

जीवन तो चलता रहता है
समय-समय पर सुख-दुख आते
अपने रंग दिखा कर जाते
याद आये गीता की पंक्ति
जो मन में भर जाती शक्ति
दुख में मन में दुख न लाये
सुख के मोह में फँस न जाये
वही स्थिर बुद्धि कहलाये
सुख दुख साथ-साथ चलता है
जीवन तो चलता रहता है
जीवन तो संघर्ष एक है
कभी विषाद है कभी हर्ष है
फिर क्यों संघर्षों से डर जायें
बिना मृत्यु के क्यों मर जायें
नित होता अवसान रात्रि का
प्रातः दिवस सुनहरा आये
अँधियारे के बाद उजियारा
नित्य प्रति आता जाता है
जीवन तो चलता रहता है
कभी पलायन की न सोचना
कुण्ठाओं से मन न घेरना
करे निराशा मन में न घर
मन को बना लो गहरा सागर
सभी समस्याओं को डुबो कर
तुमको उनके पार उतरना
सागर तो बहता रहता है
जीवन तो चलता रहता है

***

लोकगीतों में बेटी का दर्द

भारत में लोकगीतों का असीम भंडार है
हर अवसर पर गाये जाने वाले गीतों की संख्या अपार है
हर मौके पर गाने के लिये उसके अनुरूप गीत तैयार हैं
भारत की हर भाषा में, हर प्रांत में, हर धर्म-जाति में
हर रिश्ते के लिये गाये जाने वाले गीतों की भरमार है
त्यौहार के गाने, मौसम के गाने सावन में बिरहिन की पुकार है
हर देवी देवता के भजन, हर स्थान की महिमा के गीत
हर तरह के लोकगीत जीवन के आधार हैं
लेकिन लोकगीतों में बेटी का दर्द हर किसी को रुला देता है
संवेदनाओं से भरा गीत सुनने वाले की आत्मा को हिला देता है
किसी गीत में बेटी का दर्द अपने पिता के लिये होता है
बाबुल मेरे लाख हज़ारी पर हम बेटियों ने उन्हें झुका दिया
मेरे बाबुल ने हमारे लिये अपने आत्मसम्मान को भी भुला दिया
कहीं माँ बेटियाँ मिल कर बैठती हैं, अपने-अपने दर्द सुनाती हैं
गले मिल कर रोती उन माँ-बेटी की बातों ने
घर की चारों दीवारों को भी हिला दिया

बेटी का दर्द से भरा दिल माँ से कई प्रश्न पूछता है
तू मुझे बता माँ-बेटी का रिश्ता तो क़यामत तक नहीं टूटता
फिर माँ तूने अपनी लाडली को कैसे भुला दिया
माँ मुझे इतना ही बता दे तूने मुझे पैदा ही क्यों किया
तो किसी गीत में अपनी स्थिति को स्वीकार करके
कहती है बाबुल हम तेरे आँगन की चिड़ियाँ पंख लगते उड़ जायेंगी
हमारी लम्बी उड़ान हमें न जाने किस देश ले जायेंगी
बाबुल हम तो तेरे आँगन की गैयाँ हैं जिधर हाँकोगे हँक जायेंगी
पर तुमने मुझे दूर बिदेस में क्यों ब्याह दिया

एक अन्य गीत में बेटी तरह-तरह के तर्क देकर
पिता से रोकने को कहती है- पिताजी मेरी डोली रोक लो

मेरे गुड्डा-गुड़िया से कौन खेलेगा मुझे रोक लो
पिता कहते हैं- मेरी पोतियाँ खेलेंगी बेटी तू अपने घर जा
पिता जी मेरे इतने सारे कपड़े रखे हैं इन्ह कौन पहनेगा?
बेटी मेरी पोतियाँ पहनेंगी तू अपने घर जा
पिता जी रास्ते में मुझे भूख प्यास लगेगी तो क्या होगा?
बेटी मिठाई, कचौरी के थाल रख दूँगा राह में कुँआ खुदवा दूँगा
तू अपने घर जा बेटी अन्तिम तर्क देती शायद पिता मान जायें
पिता जी आपके महल का द्वार छोटा है डोली कैसे निकाल पायेंगे
पिता के पास भी हर समस्या का समाधान था
हम द्वार की एक-एक ईंट निकलवा देंगे तू अपने घर जा

एक लोकगीत में उस बेटी का दर्द जो माँ की गोद में थी
तभी उसका ब्याह हो गया लेकिन अब वह बड़ी हो गई थी
हाल ठीक नहीं क्योंकि उसके पिया को बैरन रेल दूर ले गई थी
वह बादल से विनती कर रही है, उसके बिदेसिया का पता लगाये
भैया बादल तुम ही घूम-घूम कर मेरे पिया का पता लगाओ
बाल विवाह का यह सचित्र चित्रण लोकगीतों में ही मिल सकता है
कहीं बेटी बाबुल को संदेशा भेजती है इस सावन भैया को भेज कर
अपनी बिछड़ी बेटी को घर बुलायें कितनी खुशी पाऊँगी सबको देखकर
युग बीत गया न कोई चिट्ठी न ही मायके से कोई आया
क्या बेटी को विदा करके उससे मिलने का विचार कभी नहीं आया?''
बिदा होती हीर को कैसे भूलें सुन उसकी शिकायत और विनती
हीर की चीख आज भी माटी के कण-कण में है गूँजती
बाबुल कहार मेरी डोली उठाकर ले चले मुझे रोक लो रख लो
तुम तो मेरा कहा नहीं टालते थे तुम्हारी छाया में दिन चार रह पाई
ऐसे ही असंख्य लोकगीतों और लोकगीत गायकों से
गाँव-गाँव, नगर-नगर भरे हुए हैं
इस दिल छूने वाले असीमित भंडार को सुरक्षित रखना
तथा जन-जन तक पहुँचाना हम सबका कर्तव्य है
क्योंकि इनमें निहित हमारे लोकजीवन का अस्तित्व है

***

हैरानगी है

जी रहे तेरे बिना कैसे
अजब हैरानगी है
यूँ तो सुबह, शाम, रात और दिन
सभी हैं बीत जाते
हम कभी रोते, कभी हँसते
कभी हैं गीत गाते
काम दुनिया के सभी
होते हमारे हाथ से हैं
इस तसल्ली, इस वहम में
तू हमारे साथ में है
दिल की हर धड़कन में तू है
अजब दीवानगी है
फिर भी ये जीना
कोई जीना, कहा जायेगा कैसे
जी रहे तेरे बिना हम
एक ज़िंदा लाश जैसे
भीड़ में हर दम अकेले हम हैं रहते
टूटने का दर्द हरदम हम हैं सहते
ये ज़मी ये आसमाँ
लगते सभी सुनसान से हैं
हम अकेले, जग पराया
और सब अनजान से हैं
ज़िंदगी में आस की
कोई किरण दिखती नहीं है
अजब वीरानगी है

***

दर्द का फ़साना

तूने जो ग़म की दौलत, बख़्शी बड़ी अदा से
हमने उसे है रखा, सीने में यूँ छुपा के
जैसे गुनाह कोई, अपने छुपा के रखता
जैसे कि कोई आँसू, आँखों में बँद रखता
जैसे तिजोरियों में रखता कोई खज़ाना
वैसे ही मैंने रखा है दर्द का फ़साना

उतना ही हूँ मैं हँसती, जितना ये दर्द बढ़ता
जैसे कि खून से दिल, मूरत कोई है गढ़ता
फिर भी न कोई शिकवा, अब न कोई गिला है
तू न मिला तो क्या है, तेरा दर्द तो मिला है

तूने दिया जो मुझको, वो है नसीब मेरा
अपना नसीब मैंने दिल में छुपा के रखा
तू मेरे दिल के अन्दर, दिल में नसीब मेरा
इतना मेहरबाँ किस पर, ख़ुदा आज तक हुआ है

***

खुल गई गाँठ तो

खुल गई गाँठ तो बिखर सब कुछ गया
बंद रही गाँठ तो निखर सब कुछ गया
मन की बात जब तक मन के अन्दर रहे
तब तक ही अच्छी और ठीक जगह रहती है
जब बात मुँह से निकल जाये तब अपनी कहाँ रहे
वो तो दुनिया की बन जाती है
क्योंकि ''बात निकले तो बहुत दूर तलक जाती है''
शायर यूँ ही तो नहीं कहते
बात बिल्कुल सच्ची है और दुनिया,
उस बात में नमक, मिर्च, गरम-मसाला,
चाट-मसाला मिला कर लोगों को सुनाती है
लोग सुन-सुन कर आनन्द उठाते हैं
बंद गाँठ खोलने वाले शर्म और दर्द से भर जाते हैं
रहीम जी ने भी यही कहा है-
''रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखो गोय
सुनि इठिलइहें लोग सब बाँट न लइहै कोय''
यह आश्चर्य की बात है कि सबके दुख एक से ही होते हैं
फिर भी लोग एक दूसरे के दर्द को क्यों नहीं पहचान पाते हैं
मीराबाई ने भी कहा ''घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय
लेकिन आज शायद ज़माना बदल गया है
घायल भी घायल का दर्द महसूस करना भूल गया है
इसीलिये याद रहे कि-
खुल गई गाँठ तो सब कुछ बिखर गया
बंद रही गाँठ तो सब कुछ सँवर गया

***

तू ही दीनबन्धु

तू ही दीनबन्धु दयानिधि
प्रभु तू ही दीनदयाल है
मेरी ज़िंदगी मेरे मेहरबाँ,
तेरा सिर्फ़ ख्वाब औ' ख़याल है
ज़रा मुस्कुरा के तू देख ले,
मेरी ज़िंदगी का सवाल है।
तेरा ख़्याल ही मेरी ज़िंदगी,
तेरा ख़्याल ही मेरी बन्दगी,
तेरा ख़्याल ही मेरी हर खुशी,
तेरा ख़्याल ही मेरा हाल है।
मेरी हर नज़र में छुपी हुई
इक चाह तेरे दुलार की
तू ज़रा जो प्यार से देख ले
मैं न होऊँ खुश क्या मज़ाल है
तेरा प्यार ही मेरा आसमाँ
तेरा प्यार ही मेरा कुल जहाँ
तेरा प्यार ग़र न मुझे मिले
तो ये जिंदगी भी बवाल है
मेरी ज़िंदगी हे दयानिधि
तेरा सिर्फ़ ख्वाबो ख़याल है
ऐ मेरे प्रभू तू है हर जगह
तेरे साथ ही मेरी शाम सुबह
तू मिलेगा कब ये बता दे मुझे
या अपने पास बुला ले मुझे
तू ही दीनबन्धु दयानिधि
प्रभु तू ही दीनदयाल है

***

उसके इंगित पर नाचेंगे

ऊपरवाला देख रहा बैठा अपने अभिनेताओं को
जो उसके इंगित पर नाचेंगे
वो भी ऊपर बैठे-बैठे
उनके पल-पल के अभिनय की कथा बाँचेंगे
काले-गोरे, बूढ़े-छोरे, पतले-मोटे, लम्बे-छोटे
करेंगे अभिनय सब अभिनेता
कोई चोर डकैत बनेगा, कोई रिश्वतखोर या तस्कर
बलात्कार भी कर सकता है किसी मैया का बेटा
कोई बैठा कुर्सी पर और सब पर हुकुम चलाता है
कोई उसके जूतों को भी प्यार से बस सहलाता है
किसी के घर में नाज न मुट्ठी
किसी के घर में बोरी है
कोई चोर बना घूमे और किसी के घर में चोरी है
चोरी करके एक हँसता दूजा चोरी से रोया
ऊपर वाले के बंदों ने क्या पाया और क्या खोया
ऊँच-नीच के, जात पात के, निर्धन धनी के झगड़े हैं
इस छोटे से जीवन में हर रोज़ ये कैसे रगड़े हैं
सारा देश एक अजब सी, उलझन में है जूझ रहा
कौन देश का सच्चा नेता नहीं किसी को बूझ रहा
आम आदमी समझ न पाये ऊपर वाले की भाषा
लेकिन उसको नहीं किसी भी नेता-अभिनेता से आशा
जिनको उसने देकर वोट बनाया था भगवान
कभी-कभी क्यों वो ही नेता बन जाते शैतान
सिर्फ एक आस है उस रब की वही सभी को जाँचेंगे
वैसे भी प्रकृति का यही नियम
सब उसके इंगित पर नाचेंगे

***

हमको बनना है इन्सान

काश हम अपनी दुनिया को
बना पायें रहने के लायक
तो भगवान भी नहीं समझेंगे हमको,
बेटे नालायक
नहीं हैं हम सिर्फ आदमी
हमको बनना है इन्सान
नहीं कभी भी बात-बात पर
हमें बेचना है ईमान
अपने नैतिक मूल्यों पर
समझौता कभी नहीं करना
स्वयं को अपने आदर्शों से
कभी नहीं गिरने देना
एक आत्मा सबमें है जब
तो हम सब हैं भाई-भाई
फिर आपस में कैसी रंजिश
कैसी शत्रुता और लड़ाई
सब मिल कर जब साथ रहेंगे
बहुत काम हम कर पायेंगे
काम बहुत जब होगा तब ही
पेट सभी के भर पायेंगे
पूरी होंगी सब आशायें
अलग नहीं होंगी भाषायें
प्रेम की बस एक भाषा होगी
कहीं न कोई निराशा होगी
पृथ्वी बन जायेगी सुखदायक
हमें यही याद रखना है बस
दुनिया बनायें रहने के लायक

***

मेरे लिए ऋतुराज तुम

गीत तुम संगीत तुम पिछले जनम की प्रीत तुम
रीत तुम अनरीत तुम शतकोटि युग के मीत तुम
हार तुम मनुहार तुम पिछले जनम के प्यार तुम
गृह तुम्हीं संसार तुम मेरे सुदृढ़ आधार तुम
मेघ तुम मल्हार तुम मेरे लिये हर राग तुम
शरद् तुम हेमन्त तुम मेरे लिये ऋतुराज तुम
ज्ञेय तुम अज्ञेय तुम मेरे लिये हो प्रेय तुम
मैं उपासक देव तुम मेरे लिये हो श्रेय तुम
तुम अगम्य सुगम्य तुम मेरे लिये अति रम्य तुम
दास मैं आराध्य तुम मेरे लिये परब्रह्म तुम
लक्ष्य तुम हो ध्येय तुम मेरे लिये हो त्राण तुम
ज्ञान तुम विज्ञान तुम मेरे लिये हो प्राण तुम

***

क्षितिज और मैं

दूर क्षितिज से मुझे कौन करता इशारे
दिखाता मुझे प्रकृति के नज़ारे
कभी रंगों में छुप के मुझको पुकारे
कभी धरती के संग मिल कर निहारे
मिले जब गगन मेरी धरती से आकर
उछल कर चले नभ की ओर सागर
बिछा देता चाँद श्वेत बगुले सी चादर
तो भर जाये अमृत से मेरी गागर
मेरी कल्पनायें हैं उड़ती वहाँ तक
गगन से है धरती मिलती जहाँ तक
मुझे ले के जायेंगी अब ये कहाँ तक
हैं मिलते जहाँ धरती आकाश वहाँ तक
है आँखों का धोखा जो मुझको सताता
नहीं मुझको क्षितिज से कोई बुलाता
क्या है झूठा सपना जो मुझको हँसाता
है क्षितिज नहीं कुछ ये मुझको रुलाता
क्या बस मेरा भ्रम ये मेरा मन न माने
मुझे क्षितिज से कोई करता इशारे
बुलाये वो इंगित से कैसे नकारें
उसी की है आवाज़ मुझको पुकारे

***

होंठ सिल जाते हैं

ज़िंदगी भर
टुकड़ा-टुकड़ा ज़िंदगी को जोड़ते रहे
हर टुकड़े को वक़्त के अनुसार
इधर-उधर मोड़ते रहे
एक-एक टुकड़े में
अलग-अलग कहानी थी
किसी में बचपन की
किसी में जवानी की
लेकिन बुढ़ापा तो
खुद ही बन गया कहानी
जिसे सब समय-समय पर
बुढ़ापे की याद दिला-दिला कर तोड़ते रहे
दिल के टूटे टुकड़ों को
दिल में ही सहेज कर रख लिया
सबको दिखाने से भेद खुल जाते
बीतते गये बरस पे बरस
दिल में छुपे ज़िंदगी के टुकड़े
वक़्त बेवक़्त छिल जाते हैं
उछलते हैं बाहर आने को
मगर होंठ सिल जाते हैं

***

दर्द सच्चे मीत

दर्द सच्चे मीत अपने ज़िंदगी भर साथ देते
कितना ही कोसें उन्हें हम ज़िंदगी वो थाम लेते
दुख के पीछे छिपे सुख जब सामने आकर रिझाते
ज़िंदगी के सारे दुख तब एक पल में भूल जाते
ज़िंदगी बस सुख ही सुख है ऐसा भ्रम हमको है रहता
सुख का सुख तो वही जाने जो मनुज है दर्द सहता
बाद संघर्षों के जो मिलता कीमती कितना है होता
चाहे संघर्षों के चलते मनुज कितना ही हो रोता
करवटें संघर्ष बदलें दर्द सारे ख़त्म होते
इक नई हिम्मत से हम हैं ज़िंदगी में चलने लगते
कहते हैं मानव जनम में दुख हैं ज़्यादा सुख कम हैं
पर कभी यह सोच कर आँखें हमें करनी न नम हैं
दर्द ही देता हमें है प्रेरणा और जोश आगे
कर गुज़रते हैं कुछ ऐसा जिससे जल्दी दर्द भागे
इसलिये दर्शन ये मेरा दर्द ही है सच्चा मित्र
जिसके थपेड़े करते प्रेरित हमको गढ़ लो नये चित्र
कितना ही कोसें उन्हें हम ज़िंदगी वो थाम लेते
दर्द ही तो आखिरी पल तक हमारा साथ देते

***

अपनी जेल

यूँ अकेला छोड़ मुझको,
चल दिये लम्बे सफ़र पर।
तुमने तो वादे किये थे,
साथ दोगे हर डगर पर।
जो नई अनजान राहें, ले गईं तुमको
मेरी दुनिया में अकेला कर गईं मुझको
ज़िंदगी के रास्ते कैसे कटेंगे
हम तो अपनी जेल में ही,
क़ैदियों जैसे रहेंगे।
एक दिन वीरानियाँ
मुझको निगल जायेंगी ऐसे
ग्रहण के दिन चाँद को
राहू निगल लेता है जैसे
ये तुम्हारा फेर कर मुँह
छोड़कर मुझको, चले जाना अचानक
यूँ लगे जैसे दिखा हो
नींद में सपना भयानक
मेरे हमदम, दोस्त मेरे
मेरी किस्मत के चितेरे
रह गया हूँ मैं बिखर कर
यूँ अकेला छोड़ मुझको
चल दिये लम्बे सफ़र पर
तुमने तो वादे किये थे
साथ दोगे हर डगर पर

***

बादल और धरती

घिर आये अम्बर में बादल
झूम उठा धरती का मनवा
अब मेरी सूनी आँखें भी
देखेंगी सतरंगा धनवा

चमकी बिजली आसमान में
चमक उठीं धरती की आँखें
अब सारे पशु पक्षी मानव
खुश हो फैलायेंगे पाँखें

नभ में जो बज उठे नगाड़े
बजे ढोल भी इस धरती पर
नाच रहे अम्बर में बादल
नाच रहे कण-कण धरती पर

टप-टप-टप-टप बूँद गिरी जो
फूल पात सब ही सरसाये
बादल तो अपनी बूँदों को
इक समान सब पर बरसाये

धरती तो है सबकी माता
सबकी खुशी चाहती रहती
वन-उपवन हों नदी कूप हों
भला कृषक का माँगती रहती

जब न समय पर आयें बादल फट जाती धरती की छाती
दे पाऊँगी अपने बच्चों को कैसे मैं उनकी मनचाही थाती
पड़ते ही पानी की बूँदें धरती देने लगे ख़ज़ाना
ओ अम्बर के प्यारे बादल आते रहना-आते रहना

***

झूलती चाँदनी

पेड़ों की फुनगियों पर झूलती चाँदनी
वक़्त के अँधेरों से जूझती चाँदनी
पत्तों की चादर पर बिछलती चाँदनी
शाख टंगे पत्तों पर उछलती चाँदनी
सूखे मुड़े पत्तों पर सरकती चाँदनी
फूलों पर, कलियों पर झलकती चाँदनी
प्रेमी युगल पर महकती चाँदनी
बिरहिन की आँखों में दहकती चाँदनी
सागर की लहरों पर थिरकती चाँदनी
पर्वतों की बर्फ पर चमकती चाँदनी
क्यों किसी के मन की परत खोलती चाँदनी
लगता है सबसे बोलती है चाँदनी
क्यों किसी के अन्दर सलवटें बढ़ाती चाँदनी
क्यों रात-रात भर करवटें दिलाती चाँदनी
क्यों यहाँ-वहाँ जासूस सी घूमती चाँदनी
क्यों डाल-डाल, पात-पात झूमती चाँदनी
कभी कहीं जाना न भूलती चाँदनी
पेड़ों की फुनगियों पर झूलती चाँदनी
सबके दिलों को बूझती चाँदनी
वक़्त के अँधेरों से जूझती चाँदनी

***

भगवान के बाज़ार में रिश्ते

बन्धु मेरे-
बात चल रही है भगवान के बाज़ार की
भगवान का यह बाज़ार दुनिया के नाम से जाना जाता है
यह बाज़ार रिश्तों के धन्धों पर टिका है
इस बाज़ार में हर रिश्ता धन्धों पर चलता है
हर रिश्ता लाभ-हानि पर बिका है
इन्सान लाभ-हानि के चक्कर में कभी उठा और कभी झुका है
रिश्तों की राजनीति भी धन्धे पर टिकी और बिकी है
इस लाभ-हानि की ख़रीद बेच का
एक बहुत बड़ा शस्त्र होती है रिश्तों की राजनीति
यह शस्त्र कभी रिश्तों को काटता है
कभी जब अपना स्वार्थ नज़र आता है
तब स्वयं टूट कर रिश्तों को पक्का होने देता है
वास्तव में अपने निकटतम रिश्तों के बीच
लाभ-हानि, कम-ज़ियादा का लेन-देन चलता रहता है
धन्धों पर टिके ये रिश्ते कच्चे-पक्के चलते रहते हैं
न जाने कौन सी शक्ति मानव से ये अभिनय करवाती है
कौन से ग्रंथ उसे खरीदने-बेचने की शिक्षा दे कर
रंगमंच के पात्रों का सा अभिनय सिखाते हैं
शायद कोई नहीं क्योंकि-
भगवान् के बनाये इस बाज़ार में
सब कुछ बिक सकता है, जाति, धर्म, देश और आत्मा
यहाँ हर चीज़ बिकती है बस लेने देने वाले चाहियें
हाँ क्रेता और विक्रेता पहले से बेच कर आयें अपनी आत्मा

***

सृष्टि चलती रहेगी

मेरा बचपन बड़ा था प्यारा
मेरा बचपन बड़ा था न्यारा
मुझ नन्ही सी बच्ची को
मम्मी ने प्यार से पाला
सुन्दर सा पालना मँगा कर, मेरा झूला डाला
फिर मैं ज़रा सी बड़ी हो गई
चार महीने की हो गई
डाक्टर ने कहा अब इसकी उम्र है
केला, दाल, खिचड़ी खाने की
माँ ने मुझको यह भी बताया
आलू भुर्ता भी था खिलाया
केला पीस के मुझे खिलाया
ताक़त वाला दूध पिलाया
सुन्दर-सुन्दर कपड़े बनाकर
गुड़िया सा फिर मुझे सजाया
हर कपड़ा सुन्दर डिज़ाइन का
बना प्यार से मुझे पहनाया
फ्रॉकों में सुंदर कढ़ाई की
रंग बिरंगा स्वेटर बनाया
फिर मैं थोड़ी बड़ी हो गई
स्कूल जाने की उम्र हो गई
स्कूल जाना लगता था प्यारा
मेरा बचपन बड़ा था न्यारा
जाने कब वक़्त बदल गया, मैं बड़ी हो गई
आज मैं अपने बच्चों को उसी तरह पाल रही हूँ
कल ये बच्चे अपने बच्चों को पालेंगे, सृष्टि चलती रहेगी

***

कहाँ है वो निर्दयी

मेघदूत बन कर हो आतीं
कितने संदेशे लातीं ले जातीं
दुःख और सुख दोनों ही हो देतीं
रुदन किसी को खुशी किसी को तुम हो देतीं
अपने दुख का कोई कारण
हमें नहीं बतलाती हो तुम
वर्ष हज़ारों बीत रहे हैं
किसे ढूँढती रहती हो तुम

सतरंगा इन्द्रधनुष भी क्यों है निष्प्राण सा रहता
क्या तुमसे उसका कोई जंग का नाता रहता
सतरंगा बन ऐंठ-ऐंठकर अम्बर में है लटकता
वह भी तुम्हारी कोई मदद क्यों नहीं है करता
क्यों न उसे ढूँढ कर ले आता
जिसको हज़ारों वर्षों से
ढूँढती रहती हो तुम

सारी दुनिया छान-छान कर भी
पा न सकीं उसे
कण-कण से भी पूछा फिर भी
देख न सकीं उसे
तब फिर गुस्से में आ कर सब
जल-थल कर डालतीं तुम
वर्षा कहाँ है वो निर्दयी जिसे
हर साल ढूँढती रहती हो तुम

***

मेरे मन का हिंडोला

मेरे मन का हिंडोला न जाने कहाँ-कहाँ घूम आता है
लौट कर हिंडोला फिर धरती पर आ जाता है
कभी चला जाता है धरती से अम्बर तक
कभी चला जाता है अतल सागर तलक
ऊँचे पर्वतों पर बिछी श्वेत बर्फीली चादर पर सोने चला जाता है
कभी रेतीले रेगिस्तान में जा कर ऊँट पर बैठ जाता है
कभी छत पर रुक कर देखता है टूटते तारे को
माँगता है इच्छापूर्ति देखे स्नेह से सितारे को
क्यों यह तारा स्वयं टूट कर दूसरों की इच्छा पूरी करता है
सोच कर मेरा मन खुशी के साथ ठंडी आह भी भरता है
कभी हिंडोला तेज़ी से चला जाता है चाँद पर
जा कर चंदा मामा को दुःख सुख सुनाता है
द्रवित हो कर चंदा का दिल चाँदनी के रूप में
धरती पर अपने अश्रु बरसाता है
उड़ता डोलता हिंडोला चला जाता है क्षितिज तक
जहाँ अम्बर धरती से मिलने को आता है
मृग मरीचिका सा भ्रम छलता जाता है
अम्बर तो धरती से मिल ही नहीं पाता है
रात को रात रानी सुरमई चूनर पर सितारे टाँककर
अपनी सुन्दरता को मन ही मन आँक कर
आती है रिझाने मेरे हिंडोले को
चुप-चुप बुलाती है मेरे हिंडोले को
मेरे मन का हिंडोला झूमता-झामता सो जाता है
यकायक मेरा हिंडोला दूर कहीं ग़ायब हो जाता है
नया दिन धरती पर मुझको ले आता है
अब मुझे बुला रहा मेरे घर का हिंडोला
दूर कहीं छूट गया मन का हिंडोला

***

दिल चीरने वाले नारे

बात है सन उन्नीस सौ पैंसठ की
बात है भाई-भाई का नारा लगाते हुए
भाई की, मित्र की पीठ पर छुरा मारने वाले शठ की
माना कि वह तो एक विदेशी था
जो दोस्त बन कर दग़ा दे गया था
लेकिन आज हमारे देश में यह क्या हो रहा है
जिसे देखो वो दूसरे को धोखा देने की योजना बना रहा है
स्वार्थ का दूसरा नाम अस्तित्व की पुकार बना रहा है
क्या अस्तित्व की पुकार यह है कि भारत माता के बेटे
हज़ारों वर्षों से चले आ रहे रिश्ते तोड़ दें
काश्मीर से कन्याकुमारी तक फैला हुआ हमारा देश
क्या फिर से विभाजन की कगार पर चढ़ने जा रहा है
फिर कोई एक बार नई लड़ाई लड़ने जा रहा है
आज भारत माता के सुपुत्र दिल चीरने वाले नारे लगा रहे हैं
आजकल के युवा किसके सहारे जीने जा रहे हैं
देश के विकास के स्थान पर सार्वजनिक सम्पत्ति तोड़ी जा रही है
न जाने किस शत्रु के इशारे पर
युवकों की बुद्धि विध्वंस की ओर मोड़ी जा रही है
जनता के खून पसीने की कमाई का दिया गया
टैक्स का पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है
लोगों के घर, दुकान जलाकर उन्हें रुलाया जा रहा है
भारत माता की जय की जगह युवा नारे लगा रहे हैं-
''भारत के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे'', भारत को बर्बाद करें देंगे''
बुजुर्गों ने नारे लगाये थे- भारत को एक करके रहेंगे
भारत को आज़ाद करके रहेंगे प्राण न्यौछावर कर देंगे
काश! कोई आधुनिक समस्याओं का निदान करके भारत को बचा ले

***

चाँद की चाँदनी

मुझको जलाती है चाँद की चाँदनी
मुझको रुलाती है चाँद की चाँदनी
मुझको चिढ़ाती है चाँद की चाँदनी
फिर खिलखिलाती है चाँद की चाँदनी
चाँद को देख कर
बहुत से कवियों ने
बहुत गीत गाए हैं
विरहियों ने विरह गीत
प्रेमियों ने प्रेम गीत
खूब गुनगुनाये हैं
चाँद ने भी ओढ़ कर
चाँदनी की चादर
छुप-छुप कर उनके साथ
आँसू बहाये हैं
मैंने भी गिन-गिन तारे
रोज़ चाँद को निहारा है
मुझ पर भी रस बरसा दो
चाँद को पुकारा है
फिर भी क्यों मुझको
बहकाती है चाँदनी
क्यों मुझको देखकर
मुस्कुराती है चाँदनी

***

नये जन्म में

क्यों तुमने कंकर फेंका
जीवन के ठहरे पानी में
क्यों इक नया मोड़ लाते हो
मेरी ख़त्म कहानी में

जलती हुई चिता पर बन्धु
नई कहानी बने नहीं
गाँठ लगे धागों से कोई
ताना-बाना बने नहीं

नई कथा के लिये मुझे अब
जन्म नया लेना होगा
मेरे साथी यह दुख तुमको
जीवन भर सहना होगा

एक बार फिर कभी मिलेंगे
नये जनम में हम साथी
तब लिखेंगे नई कहानी
हम दोनों मिल कर साथी

***

राधा गोपाल

मैं राधा बन जाऊँ
तुम गोपाल बनो
मैं जहाँ-जहाँ भी जाऊँ
तुम मेरे साथ चलो

मैं बाँसुरिया बन जाऊँ
तुम मुझ में स्वर भर दो
मेरे गीतों को प्रिय तुम
अजर अमर कर दो

मैं बदली बन छा जाऊँ
तुम बिजली बन कर चमको
मैं जनम-जनम की प्यासी
बस देख रही हूँ तुमको

मैं मेहंदी बन बस जाऊँ
तेरे हाथों में आ कर
ताम्बूल बनूँ रच जाऊँ
तेरे होठों में आ कर

मैं चकोर बन जाऊँ
प्रिय तुम मेरे चाँद बनो
मैं राधा बन जाऊँ
तुम गोपाल बनो

***

स्वप्नों का जाल

साथी जब भी तुम
मेरे सपनों में आना
एक संदेशा नव जीवन का
आकर सपनों में दे जाना
इन सपनों के बल पर ही मैं
जीवन की इक राह चुनूँगी
इन सपनों की डोरी लेकर
नव स्वप्नों का जाल बुनूँगी
सपने में तुम मुझको मेरी
मंज़िल की इक राह दिखाना
पत्थर काँटों भरी राह पर
चलना तुम मुझको सिखलाना
साथ स्वप्न सत्य हो जायें
जीवन एक लक्ष्य पा जायें
हो जायें साकार स्वप्न पर,
मुझको छोड़ कहीं न जाना
जब भी नयन मूँद कर देखूँ
तुम मेरे सपनों में आना

***

जीने का साधन

रेत के कण-कण सा रीतता
एक-एक दिन बीतता जीवन
मुट्ठी से फिसलते रेत के कण
भरी मुट्ठी का पल भर में
खाली हो जाना
मानव जीवन की क्षणभंगुरता का
अहसास कराता है
फिर भी मानव हार नहीं मानता
कुछ कर दिखाना चाहता है
कैसी है यह जिजीविषा
मृत्यु और जीवन
दोनों अटल सत्य
जानता है मानव
वह नहीं है अमर्त्य
बंद मुट्ठी से पल-पल फिसलता
जीवन का पल-पल
विश्वास नहीं पल का
फिर भी
इन्तज़ार करे कल का
जीवन की आशा यह इन्तज़ार ही
मानव की सबसे बड़ी ताक़त है
कल कुछ कर दिखाने की तमन्ना ही
जीने का साधन है

***

सुलझा जवाब

ये कैसे-कैसे सवाल पूछता है
मेरा मन मेरे मन से
जो सिर्फ़
और नये सवालों को ही जन्म देते हैं
जिनके जवाब
शायद कभी नहीं मिलेंगे
इन सवालों के रेले
कभी नहीं रुकेंगे
इन सवालों के मेले
कभी ख़त्म नहीं होंगे
सवालों के जवाब में सवाल
जिंदगी की उलझनों का कैसा कमाल
सवालों को सवालों से
कैसे सुलझाया जाये
उलझी जिंदगी का
सुलझा जवाब
कहाँ से लाया जाये
जीवन केवल संघर्षों की ही नहीं
अपितु सवालों की कहानी भी है
वो प्रश्न जो हम खुद से करते हैं
फिर खुद ही निरुत्तर हो जाते हैं
अपने ही प्रश्न का सीधा सुलझा जवाब
हम नहीं ढूंढ पाते सिर्फ उलझ कर रह जाते हैं
यही जीवन का सत्य है
यही जीवन का दर्शन है

***

ज़िंदगी के साज़

जिंदगी जब न चले
सही किसी चाल पर
छोड़ दो तब ज़िंदगी को
जिंदगी के हाल पर
उस तरफ मुड़ जाओ
ले जाये जिधर को
पूछो मत राहों से
चलीं तुम किधर को
सोचना भी छोड़ दो
सोच पर लगा लो ताले
ज़िंदगी को कर दो
जिंदगी के हवाले
खुद को भुला कर
हो जाओ गुम
दूर कहीं शून्य में
खो जाओ तुम
एक दिन जिंदगी खुद
लगायेगी तुम्हें आवाज़
एक बार फिर बजे उठेंगे
ज़िंदगी के साज़
ज़िंदगी ही जानती है
ज़िंदगी के उतार चढ़ाव
कब आते हैं तूफान
कब आता है ठहराव

***

प्यार भोलापन

कहाँ खो गया मेरा बचपन
कहाँ खो गईं सखी सहेली
अब तो जीवन उलझा धागा
बना हुआ है एक पहेली
कितना सादा सा जीवन था
कहीं कोई छल छिद्र नहीं थे
मुँह में राम और छुरी बगल में
ऐसे कोई मित्र नहीं थे
साथ-साथ था हँसना रोना
साथ-साथ थे सुख-दुख सबके
एक समस्या किसी एक की
सब थे भागीदार उसी के
स्नेह भाव था सबके मन में
कपट जाल से थे अनजाने
किन्तु समय यह कैसा बदला
कोई किसी को न पहचानें
मित्र वहीं तक स्वार्थ जहाँ तक
नई मित्रता की परिभाषा
नेह भरे निस्वार्थ प्रेम की
अब रखता न कोई आशा
फिर भी मेरा पागल मनवा
एक आस रखता है हर पल
शायद मुझको किसी आँख में
मिल जाये प्यारा भोलापन
शायद पलभर को मिल जाये
मुझको मेरा खोया बचपन

***

वह चुप है

औरत
एक जनम में कितने जनम जीती है
सूखी आँखों से मुस्कुराती है
आँसू अन्दर पीती है
बचपन में पिता के घर
जवानी में पति के घर
बुढ़ापे में बच्चों के घर रहती है
उन घरों को बुहारती है
सजाती है सँवारती है
कण-कण निखारती है
जड़ चेतन
सबके लिए बहाती है खून पसीना
पर कोई भी घर कहलाया
उसका अपना कभी न
वह बेटी, पत्नी, माँ
दादी नानी सब कुछ है
सब हैं उसके अपने
पर क्या उसके भी हैं
कुछ अरमान कुछ सपने
वह स्वयं क्या है
उसका अपना व्यक्तित्व क्या है
इस पर वह चुप है
सब ने उस को समझाये
उसके कर्तव्य
किसी ने नहीं पूछे उससे
उसके लक्ष्य

***

पत्थर दिल न पिघले

कुछ खून हुआ अरमानों का
आँखों से आँसू भी निकले
फिर भी न जाने क्यों मेरे
अपनों के पत्थर दिल न पिघले
कोई आँखों से घूर गया
कोई तानों से मार गया
कोई तीरों से भी तीखे
जिह्वा बाणों से मार गया
कितने आये अपने बन कर
फिर छोड़ गए बेगाने से
मिल गए राह में कभी अगर
तो मिले बड़े अनजाने से
देखा तो धीरे से बोले
शायद देखा है तुम्हें कभी
राहों में मिलते बहुत लोग
पर याद हैं रहते कहाँ सभी
ऐसे ही कितने अपने है
जो पग-पग पर तड़पाते है
जिनकी सूरत और बातों से
हम सपनों में डर जाते हैं
ऐसे पल-पल होता रहता
है खून मेरी मुसकानों का
फिर भी न जाने क्यों मेरे
अपनों के पत्थर दिल न पिघले

***

अच्छा वर्तमान

अतीत में उलझ कर
सिर्फ भूले-बिसरे अँधेरे हाथ आते हैं
भविष्य में डूब कर अनजाने अपरिचित
अँधेरे डराते हैं
जो घट चुका
जो हट चुका
जो भूल कर बिसर चुका
जिसकी सिहरन से
हमारा अस्तित्व सिहर चुका
अच्छा हो जो सीख सकें
वो सीख लें अतीत की उन भूलों से
शेष सब भूल जायें
क्यों अटके रहें शूलों से
काल के गर्भ में छुपा भविष्य अनिश्चित् है
फिर क्यों
अनिश्चित् के साथ जुड़ कर
उसे नष्ट करें जो निश्चित् है
वर्तमान हर पल हर क्षण
हमारे साथ-साथ घट रहा है
फिर क्यों हमारा मन
भूत और भविष्य से लिपट रहा है
भूल जाओ दोनों को
वर्तमान को सँवार लो, निखार लो
आज का वर्तमान ही कल का अतीत है
अच्छा वर्तमान ही अच्छा भविष्य है

***

मेरी खामोशी ने

साथी मेरी खामोशी ने
अक्सर तुम्हें पुकारा है
मेरी अँधियारी दुनिया का
तू ही एक सितारा है
तूफानों में फँसी नाव का
तू ही एक किनारा है
जीवन को इक लक्ष्य मिला है
जब भी तुझे निहारा है
दुनिया में मेरे जीने का
तू ही एक बहाना है
मेरी रातों की नींदों का
तू ही स्वप्न सुहाना है
जीवन में दुख दर्द बहुत हैं
कभी घोर हैं अँधियारे
ऐसे में प्रिय बन्धु मिले तो
जीवन में हों उजियारे
सच्चा साथी ही जीवन का
सबसे बड़ा सहारा है
साथी मेरी खामोशी ने
अक्सर तुम्हें पुकारा है

***

ये कैसा दोराहा

इस ज़िंदगी की उलझनों में हम ऐसे जी रहे
जैसे प्याले ज़हर के हम रोज़ पी रहे
ठुकराते हैं ठोकरों से सब पुरानी यादों को
हँस-हँस के याद करते हैं किसी के झूठे वादों को
सोचते हैं अगर मिल भी जाये कोई ज़िंदगी के किसी मोड़ पर
बढ़ जायेंगे आगे होकर बेपरवाह नज़रों को मोड़ कर
किसी के रोकने से क्या ज़िंदगी रुक जाती है
ख़ुदी को बुलंद करने से तो ख़ुदाई भी झुक जाती है
यूँ तो अब उम्मीद की डोर टूट रही है
लगता है ज़िंदगी हाथों से छूट रही है
ये कैसा दोराहा आ गया है ज़िंदगी में
कहीं नहीं मिलता चैन न पूजा में न बंदगी में
खुद को खुद ही लगाते हैं घाव अपने बनाये उसूलों से
भरते रहते हैं झोली अपनी कभी काँटों से कभी फूलों से
खुद के लगाये घाव खुद ही सी रहे हैं
इस ज़िंदगी की उलझनों को हम ऐसे जी रहे हैं

***

कहानी रोटियों की

क्या बताऊँ
क्या दिखाऊँ
क्या सुनाऊँ
मैं कहानी रोटियों की
क्या कहूँ
कैसे कहूँ
कैसे सहूँ
कैसे खिलाती है ये शतरंज
ज़िंदगी की गोटियों की
खूब दिखलाती है किसमत
कैसे बिक जाती है
इस रोटी की खातिर
हाय असमत बेटियों की
ज़िंदगी होती खतम
होते अनसोचे सितम
इन रोटियों के लिये ही तो
पिस रहा इन्सान पल-पल
घिस रहा खुद को
जलाता आग अपनी बोटियों की
क्या सुनाऊँ मैं कहानी रोटियों की

***

कितनी कहानियाँ बोलती हैं आँखें

कितनी शिकायतें रहती हैं आँखों में
कितनी इनायतें रहती हैं आँखों में
कितनी हिदायतें रहती हैं आँखों में
कितनी हिकायतें रहती हैं आँखों में
कितनी व्यथायें रहती हैं आँखों में
कितनी कथायें रहती हैं आँखों में
कितनी भाषायें लिखी हैं आँखों में
कितनी आशायें दिखी हैं आँखों में
कितने सदमे बसते हैं आँखों में
कितनी कहानियाँ रहती हैं आँखों में
दिल की बेजुबानियाँ बोलती हैं आँखों में

***

ज़िंदगी ही हारी

कुछ राहें खो गई
ज़िंदगी के तूफानों में
कुछ को हमने छोड़ दिया
सच्चे झूठे बहानों में
इस तरह भूलते रहे
मंज़िलों के रास्ते
पता नहीं हम क्यों जीते रहे
किस लिये, किसके वास्ते

कैसी भूल भुलैया है
ज़िंदगी हमारी
पता नहीं कब जीती
ज़िंदगी की बाजी
पता नहीं किस पल
ज़िंदगी ही हारी

***

वो लड़की

आज उम्र के इस आखिरी पड़ाव पर
क्यों सिर उठा रही है
क्यों जागना चाह रही है
क्यों एक आखिरी साँस को
जी भर कर जीना चाह रही है
मेरे अन्दर की वो नन्ही लड़की
जो आज तक छुपी बैठी रही
घर गृहस्थी और समाज की
अदृश्य बेड़ियों में बँधी
एक अँधियारे कोने में
जिसका जीवन गुज़र गया
दिन भर अपनों के काम करने में
और रात को एक अधूरी नींद सोने में
वो भूल गई वो दिन जब खेलती थी लुकाछुपाई
जब करती थी विद्यालय विश्वविद्यालय में पढ़ाई
जब पानी में तैरती थी
तितलियों के पीछे भागती थी
लहरों सी लहराती फूलों सी मुसकाती थी
वो हमजोलियाँ वो ठिठोलियाँ
सब कुछ कहाँ खो गया कहाँ गईं वो घड़ियाँ
कहाँ भाग गईं वो गुड़ियाँ
आज नाती पोतों को देख के
अँधेरों में छिपी वह लड़की, कहाँ से निकल आई
क्यों वो लड़की एक बार फिर जाग गई
शायद हर उम्र में मन के किसी कोने में
वो लड़की रहती थी, मैं ही नहीं पहचान पाई

***

बीत गया एक और वर्ष

कैसे कुछ अपने
अचानक पराये हो जाते हैं
कैसे कुछ सपने
सच हो कर सामने आ जाते हैं
कुछ कर पाने
और कुछ न कर पाने की घुटन
ज़िंदगी के मोड़ों पर
मुड़ गए एहसासों की छुअन,
कुछ चीन्हे
कुछ अनचीन्हे अरमानों के साये
कुछ अनबूझे प्रश्न
अन्तस् में छुपाये
ऐसी ही भ्रान्तियों के बीच
ज़िंदगी कट जाती है
फिर भी
क्या बीत गये दिन भुलाये जाते हैं
हाँ कभी कुछ पराये अपने हो जाते है
कभी अचानक ही
कुछ अपने पराये हो जाते हैं
कैसे मिल पायेगा
इन सबका निष्कर्ष
बीत गया एक और वर्ष

***

अनचाही चुप्पी

जब भी मैं अपने ज़ख्मों को
आँसुओं के मरहम से
सहलाना चाहती हूँ
ठीक करना चाहती हूँ
तभी न जाने कहाँ से आकर
एक भयंकर चुप्पी
मुझे घेर लेती है
और मेरे आँसू बाहर न निकल कर
अन्दर जा कर
मेरे ज़ख्मों को कुरेदना शुरू कर देते हैं
यह भयंकर चुप्पी
मुझे अन्दर ही अन्दर
खोखला करना शुरू कर देती है
और मेरी अश्रुविहीन आँखों में
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की शून्यता भर जाती है
यह न सह पाने न कह पाने की विडम्बना
क्यों इतनी निष्ठुरता से मुझे तड़पाती है
यह उदास ठंडी अनचाही चुप्पी
कहाँ से आ कर
मेरे अन्तर में समा जाती है

***

यादों की समाधि

कुछ भूल गये कुछ भुला दिया
इस तरह पुरानी यादों को
गहरी समाधि में सुला दिया
हम समझे खुद को छुड़ा लिया
यादों का खज़ाना लुटा दिया
छींका बिल्ली के भागों से
कड़कड़-कड़ करके टूट गया
चोरों ने चुरा लिया बक्सा
बेगानों का दामन छूट गया
मन भी था बस हल्का-हल्का
चेहरा भी था चमका-चमका
पर यह सब सिर्फ कहावत है
न भूलना दिल की आदत है
उफ़ बड़ी बेशरम हैं यादें
ये न मानें कोई वादे
गहरी समाधि से निकल पड़ीं
मेरी बुद्धि फिर से जकड़ी
मैं समझी जिन को भूल गई
वो फिर से दिल में झूल गईं
हम फिर से ग़म में डूब गये
हम फिर से खुद से ऊब गये
न भूल गये न भुला दिया
यादों ने फिर से रुला दिया

***

ज़िंदगी ने मारा है

पहले तो आदमी मौत ही से मरता था
आज तो आदमी को ज़िंदगी ने मारा है
खुशियाँ या ग़म ज्यादा या कम
इसी हेर फेर में ज़िंदगी से हारा है
रिश्तों की डोरियों में खींचतान है बड़ी
कभी हाथ आता कभी छूटता किनारा है
फूलों और काँटों को तो रहना साथ-साथ है
माली ने दोनों को प्यार से दुलारा है
क्या खोया क्या पाया ज़िंदगी की दौड़ में
क्या-क्या है दूसरों का और क्या हमारा है
ऐसे ही ताने-बाने ज़िंदगीभर बुनता है
मर-मर कर जीता है जी-जी कर मरता है
न जाने कब किसका सूरज चढ़ जाये
जाने कब डूबा किसका सितारा है
ऐसे ही क़दम-क़दम पर ज़िंदगी भर
आदमी को ज़िंदगी ने मारा है

***

गीतों की दौलत

दिल के तारों को झंकृत कर
मैंने कुछ गीत सुनाए थे
लेकर कुछ नए-नए अरमाँ
कुछ सुन्दर स्वप्न सजाये थे

मेरे स्वप्नों को न तोड़ो
जीवन की धारा न मोड़ो
मैंने तो बस इन सपनों में
कुछ सुन्दर चित्र बनाये थे

टूटे दर्पण का हर टुकड़ा
मेरी तस्वीर बनाता है
उन तसवीरों में आँखों ने
आँसू अनगिनत बहाये थे

जब घाव हृदय के बढ़ जाते
कागज़ पर बिखर-बिखर जाते
दिल के उस लाल लहू से ही
कुछ प्यारे गीत रचाये थे

इन दर्द भरे गीतों में ही
जीवन का सारा सत्य छिपा
मन की यह बात सुनाने को
जीवन के वर्ष लुटाये थे

मेरे दिल ने जो रचे गीत
उनका तो कोई मूल्य नहीं
उन गीतों की दौलत से ही
मेरे जीवन में शून्य नहीं

***

एक और तारा

मुट्ठी भर तारे मैं तोड़ लाई अम्बर से
बैठ गई टाँकने अपनी चुनरिया में
एक बूँद सागर से चुरा लाई चुपके से
ला कर छुपा दी अपनी गगरिया में
कितने जतन से टाँक दिये सारे
चम-चम चम चमक उठे अम्बर के तारे
ओढ़ कर निकल पड़ी जग की बजरिया में
चूनर के तारों में सबके मन अटके
भूल कर राह राहीजन भटके
चूनर तो बस गई सबकी नज़रिया में
अम्बर भी तारों से मिलने को उमड़ पड़ा
बिछड़े उन प्यारों से मिलने को घुमड़ पड़ा
गर्जन कर तर्जन कर विद्युत संग ढोल बजा
एक आँसू टपकाया मेरी गगरिया में
टँका एक और तारा मेरी चुनरिया में
बादलों से लौट कर सागर की बुंदियाँ
टप-टप टपकीं अपनी नगरिया में

***

नीरवता

बहुत बार हम स्वयं से
बहुत से प्रश्न करते हैं
परिचित होना चाहते हैं स्वयं से
जानना चाहते हैं आत्मा को
पहचानना चाहते हैं परमात्मा को
ऐसी स्थिति में हम मिलें स्वयं से
मिलें नीरवता में अपने आप से
क्योंकि नीरवता में ही
अन्तरात्मा स्वयं को सबसे अच्छी तरह
करती है प्रकट
देखती है स्वयं को अपने निकट
जब नीरवता में मानव होता है
खुद अपना साक्ष्य
तब नीरवता में होता है
स्वयं से पूर्ण तादात्म्य
नीरवता में होता है
पूर्ण आनन्द का विस्तार
होता है स्वयं से साक्षात्कार
नीरवता में ही है
स्वयं को पूर्णतः पाने का आधार

***

कुछ ठाना है

मन ने कुछ माना है
हमने कुछ ठाना है
कुछ खुद को सिखाना है
कुछ कर के दिखाना है

जीवन तो छोटा है
कुछ करना अनोखा है
यूँ समय तो थोड़ा है
पर बड़ा बनाना है

जो सपने देखे हैं
पूरे वो करने हैं
उन सपनों से अपनों को
खुश करके जाना है

जाना तो नियति है
खुद से इक विनती है
जो मन में ठाना है
अब उसको निभाना है

दुख दर्द मेरे बन्धु
सबके ही होते हैं
कुछ उनका सुनना है
कुछ अपना सुनाना है

***

झर आईं आँखें

दिल रोया भर आईं आँखें
झर-झर-झर झर आईं आँखें
दिल के रहस्य क्यों खोल गईं
अनहोनी कर आईं आँखें
आँख तो दिल का आईना हैं
दिल की बातें इनमें झाँकें
कितने टुकड़ों में टूटा दिल
कितने ज़ख़्मों के हैं टाँके
जब दर्द भरे हद से ज़्यादा
कोई न बाँध गया बाँधा
तब बरस-बरस कर बह निकलीं
तन की आँखें मन की आँखें
दिल रोया भर आईं आँखें
झर-झर-झर झर आईं आँखें

***

एक कली

एक कली गुलशन में महक-महक जाये है
कोयलिया बगिया में चहक-चहक जाये है
मन की बावरिया, ढूँढे साँवरिया
तड़पे चकोरी सी, चिल्लाये पिया-पिया
बैरन कोयलिया क्यों कुहुक-कुहुक जाये है
पी कहाँ छुप गए बागों में उपवन में
कंदर गुफाओं में पर्वत में घन वन में
आग लगी अन्तर्मन दहक-दहक जाये है
फूल-फूल पूछ लिया, पात-पात ढूँढ लिया
दिशा-दिशा पूछ रही, कहाँ पिया, कहाँ पिया
याद पिया आये तन लहक-लहके जाये है
अमराई से आई पवन, लाई न संग सजन
भूल गई सुधि सारी, बिसर गई सब तन-मन
पगलाई डोलूँ पग बहक-बहक जाये है
एक कली गुलशन में महक-महक जाये है

***

मक़्सदों के घेरे

मक़ूसदों के घेरों में घिर जाने के बाद
ज़िंदगी के कौन से मक़ूसद
पूरे हुए और कौन से
मंज़िले मकसूद तक
पहुँचने से पहले ही
बेरहम दुनिया की ठोकरों से
चकनाचूर हो
रास्ते में ही दम तोड़ गए
कौन से-
पहले मोड़ से ही मुँह मोड़ गए
यह सब सोचने का समय
इन्सान जान बूझ कर नहीं निकालता
क्योंकि वह
अपने खुद के
तसव्वुर में तराशे गए
मक़ूसदों के टूटने के अहसास को
सह नहीं सकता
और इसलिए
टूटन की चुभन
और चुभन की जलन के बारे में
कुछ कह नहीं सकता
या
कहना नहीं चाहता

***

फूली सरसों

पीली सरसों फूल रही है
डाली-डाली झूल रही है
तू भी फूल मेरे मन
नर्तन कर छननन छन

काली कोयल कूक रही है
तेरे मन क्यों हूक रही है
तू भी गा मेरे मन
दे दे ताल तूम तनन तनन

फूली सरसों फूले सारे
तेरे स्वप्न क्यों रहे कँवारे
पूरे कर सुखद सपन
और बुझा मन की अगन

सरसों का रंग लुभा रहा है
मन की अगन को बुझा रहा है
देख के पीली चादर खेतों में
कृषक खुशी से हुए मगन
तू भी फूल मेरे मन
नर्तन कर छननन-छन

***

साथ-साथ सहेंगे

दिन तो निकल जाता है
जीने के चक्करों को सुलझाने में
कुछ को याद रखने में
कुछ को भुलाने में
दिन ढलने के साथ साथ
दिल खुद को उलझाने लगता है
तनहाइयों के साये में
खुद को रुलाने लगता है
ऐसे में डूबते सूरज की
घर जाती किरणें
मेरे घर के शीशों पर चमकती हैं
जैसे मुझसे विदा लेने आई हैं
कल हम फिर मिलेंगे
बस सुबह तक की तन्हाई है
अँधेरों की परछाईयाँ
मेरी खिड़कियों से झाँकने लगती हैं
घर के हर कोने में मुझे ताकने लगती हैं
मानो मेरे अँधेरों को बाँटने आई हैं
एक तसल्ली एक संदेशा लाई हैं
तुम अकेली नहीं हो
हम तुम्हारे साथ रात भर रहेंगे
ये अँधेरे
हम साथ-साथ सहेंगे

***

इससे पहले कि

इससे पहले कि
तुम्हारा आज कल बन जाये
अपने आज को
जी भर कर जी लो
जीवन के पल-पल को
स्नेह से सींच कर
अमर फल प्राप्त करो
अमृत रस पी लो
घाव तो सभी के दिल पर
लगते ही रहते हैं
होठों पर हँसी लिए
लोग दर्द सहते हैं
इससे पहले कि
ज़ख्म नासूर बन जाये
ज़ख्म खुद ही सी लो
ज़िंदगी बहुत छोटी है
क्षण-क्षण अनमोल है
सबसे बड़ा सच आज है
कल का क्या मोल है
थोड़ी खुशी बाँट दो
थोड़ी सी रख लो
इससे पहले कि
खुशी का पल कल बन जाये
आज की खुशी को
जी भर कर जी लो

***

अतीत की दस्तक

जब अतीत
वर्तमान की दहलीज़ पर आकर
दस्तक देता है
खण्डहरों की दीवार
हिलने लगती हैं
दीवारों पर लगी बेरंग तस्वीरें
जैसे बाहर निकलने लगती हैं
हर खिड़की से
कोई झाँकता नज़र आता है
कोई दरवाज़ा
किसी की पदचाप सुनाता है
यादों के खण्डहर
जीवन्त हो उठते हैं
बार बार आकर
वर्तमान को झकझोरते हैं
दिल को तड़पाते हैं
आँखों को भिगोते हैं
यादों में चमकते
अतीत के मोती
आँखों से टपकते हैं
अतीत आ आ कर
वर्तमान के दरवाज़े पर
दस्तक देता है
पुकार पुकार कर कहता है
मैं भी कभी वर्तमान था

***

इसी को नींद कहते हैं

रोज़ जब शाम ढलने लगती है
मेरे सब्र का बाँध पिघलने लगता है
आसमान से आकर अँधेरों की चादर
घर बाहर
मेरे आस-पास फैलने लगती है
या मुझे निगलने लगती है
अँधेरा मेरे तन-मन में समाने लगता है
मेरे कानों में कोई धीमे-धीमे
दर्द के राग गुनगुनाने लगता है
उदासियों के घेरे गहराने लगते हैं
दिल और दिमाग़ पर
काले बादल फहराने लगते हैं
यह कैसी घुटन है
यह कैसी चुभन है
यह कैसी टूटन है
जो ढलते दिन के साथ, मुझे तोड़ने लगती है
जो गहराती रात के साथ
मेरे दिल को अँधेरों की तरफ, मोड़ने लगती है
कुछ आड़ी-तिरछी परछाइयाँ
ख़यालों में आ-आकर नाचने लगती हैं
और मेरी ज़िंदगी के
पूरे चिट्ठी बाँचने लगती हैं
फिर न जाने कब
रात मुझे पूरा निगल लेती है
शायद- इसी को नींद कहते हैं

***

रिश्तों के फूल

रिश्तों के फूल
एक बार मुरझा गए
तो कितना ही सींचो
वह ताज़गी नहीं आएगी
दिल से निकलने वाले कहकहे
खुले दिल की खिली-खिली बात
इनमें एक बार कड़वाहट आई
तो कितना ही हँसो
वह बानगी नहीं आएगी
दिल से दिल तक बहने वाली, नदी की धार
दिलों को जोड़ने वाले, प्यार भरे तार
अगर एक बार टूटे, तो कितना ही मोड़ो
वह रवानगी नहीं आएगी
दोस्त - रिश्तों के ये रिश्ते
खिलने दो, महकने दो
प्यार में बहने दो, चहकने दो
दिल से जुड़े रहने दो
अगर ये रिश्ते वक़्त पर नहीं सँभाले
तो सिर्फ बेचारगी हाथ आयेगी
रिश्ते टूटने का ग़म
दिल टूटने से कम नहीं होता
खुद लुटने का दर्द पछतावों से कम नहीं होता दिल को
लाख मनाओ दीवानगी नहीं जायेगी मुरझाए फूलों को
कितना ही सींचो
ताज़गी नहीं आएगी

***

कबीर का सच

बाद मरने के ऐ मेरे खुदा
मुझको थोड़ी देर के लिये
थोड़ी सी ज़िंदगी देना
जिससे मैं देख सकूँ कि मेरे अपने पराये
जो मेरे मरने पे आये
मेरे नाते रिश्तेदार
जिनसे किया मैंने जीवन भर प्यार
मेरे दोस्त और दुश्मन
आस-पास के जन-गण
मुझे कैसे विदा करते हैं
काँधों पर मेरी अर्थी उठाये हुए लोग
क्या सचमुच राम का नाम सत्य समझते हैं
जो हमेशा मुझे अपने से कमतर समझते रहे
जो हमेशा मेरी खुशियों से जलते रहे
जो मेरे ग़म में खुश होते थे
मेरी खुशियों से सहम जाते थे
वो लोग कैसे मेरे जनाज़े के साथ चलेंगे
एक छुपी मुस्कुराहट के साथ
एक सुकून की चाहत के साथ या सच मुच
कुछ क्षण के लिये उनमें कबीर समा जायेगा
सामने मौत की सच्चाई को देख
शायद उनकी आँखों से भी
एक बूँद खारा पानी
मेरे लिये टपक जायेगा

***

चँद पंक्तियाँ

किया जब भी याद तुमको
तुम इस अदा से आए
कि बुलाते रह गए हम
तुम लौट कर ना आये

तेरे सारे तीर हमने
सीने पे सह लिए हैं
आँसू भी सारे आँखों से
दिल में बह लिए हैं

जीना बहुत है मुश्किल
आसान थोड़ा कर दो
राहों को ज़िंदगी की
इक मोड़ नया दे दो

***

तूने तो कर दिये हैं
आँसू मेरे हवाले
तीरों से छलनी सीना
कैसे उन्हें सम्भालें

ये रौशनी सी कैसे, आगे बिखर गई है
है कौन जिसने आकर, अँधेरे मिटा दिये हैं

ज़िंदगी जीना बहुत दुश्वार है
जी सका इसको जो, वो दिलदार है

मेरे दर्द को हवा दे
तुम और मत बढ़ाओ
थोड़ा सुकून दे कर
बिगड़ी मेरी बनाओ

छूटते सम्बल

शून्य के अतल तल में
डूबती जा रही मैं
भावनाओं के ज्वार
कुंठाओं के प्रहार
अन्तस् की टूटन
टूटन की चुभन
कभी विस्मृत हो जाती पल में
कभी फूट पड़ती है
अन्तस्तल में
जीना एक कला है
कभी मरना भी तो भला है
जीने के लिये जीना
मरने के लिये मरना
जीवन और मरण
जीवन का दर्शन
यों ही सब बीत रहा
छल में
ढूँढती हूँ सहारा
छूटते सम्बल में

***

दे अपनी रहमत मुझको

सुख पल भर के दुख बरसों के फिर भी हम जीते रहते
जी-जी कर मरते रहते हैं मर-मर कर जीते हैं रहते
जी न पायें मर न पायें, ये कैसी दुनिया तेरी
करें शिकायत किससे जा कर जब है ये दुनिया तेरी
मरना ग़र आसान नहीं तो जीना भी आसान नहीं
फिर भी हम जीते जाते हैं क्या तुझ पर अहसान नहीं
तू ही हमें बनाता है और तू ही देता है सब कुछ
फिर भी क्यों पहले देता है और छीनता फिर है सब कुछ
यह कैसा दस्तूर हमें है मर-मर कर जीना पड़ता
एक बूँद अमृत के बदले घड़ों ज़हर पीना पड़ता
नहीं चाहिये धन और दौलत या रुतबा शोहरत मुझको
देना ग़र कुछ मुझे चाहता दे अपनी रहमत मुझको

***

आहट तुम्हारी

नेह के दो पल कभी जो थे गुज़ारे
वही बन गए ज़िंदगी के सहारे
कहीं से है आती एक बिछड़ी हुई खुशबू
कहीं से हैं आते यादों के रेले
कभी कानों में गूँजती हैं कुछ आवाज़ें
कभी लग जाते हैं बीती बातों के मेले
हर पल छिन आस-पास
भटकते हैं यादों के साये
नेह भरे शब्द दो
जो कभी तुमने सुनाये
उनकी अनुगूँज बसी
आज तलक तन-मन में
आहट तुम्हारी बसी
सृष्टि के कण-कण में
कण-कण से क्षण-क्षण कोई मुझको पुकारे
वही क्षण बन गए ज़िंदगी के सहारे

***

कुछ फ़र्ज़ कुछ कर्ज़

कुछ फ़र्ज़ निभा बैठे
कुछ फर्ज़ निभायेंगे
दो दिन तो कट ही गए हैं
दो भी कट जायेंगे
जीवन के चार दिवस ये
तो काट के जाने हैं
सबके हिस्से के पल छिन
तो बाँट के जाने हैं
जिसका जितना भी ऋण है
वह हमको चुकाना होगा
नियति के आगे सब को
निज शीश झुकाना होगा
अपने हिस्से कितने क्षण
यह अब तक जान न पाए
शायद इस कारण ही हम
खुद को पहचान न पाए
कुछ कर्ज़ चुका बैठे
कुछ कर्ज़ चुकायेंगे
अपने हिस्से के दो दिन
यूँ ही कट जायेंगे

***

नेमत है तनहाई

कुछ लोग पूँछते हमसे
कैसे तन्हा जी लेते हो
महसूस नहीं कुछ होता
या आँसू पी लेते हो
हमने उनको बतलाया
इक नेमत है तन्हाई
इस में ही देख सकें हम
अपने अन्दर की ख़ुदाई
खुद से जब बातें करते
तन्हाई सब मिट जाती
आँसू की बूँद अकेली
है एक कथा लिख जाती
मोती बिखरे कागज़ पर
जो आँसू की लड़ियों के
वो आकर जोड़ें रिश्ते
मेरी टूटी कड़ियों के
ये तन्हाई भी बन्धु
हमको जीना सिखलाती
सुख-दुख सम करके जानो
गीता का ज्ञान पढ़ाती

***

ज्योतित

आज चाँद को ढलते देखा
कौंध उठी विद्युत सी मन में
आह एक दिन इसी चाँद सा
ढल जायेगा
हो जायेगा अस्त
शून्य में छिप जायेगा
क्षणभंगुर जीवन मानव का
फिर जब बीती रात
हुआ जब प्रातः
निकल आया सूरज का रथ
हो गया तम तमिस्त्र का अन्त
हुआ स्वर्ण किरणों से ज्योतित पथ
लिया इक नई आस ने जन्म
मिटा नैराश्य मिला सुपथ
बन्धु एक दिन
इसी तरह से हो जायेगा अन्त
हमारे अन्तर के दानव का
हो जायेगा अमर ज्योति से ज्योतित
क्षणभंगुर जीवन मानव का

***

पल में एक नया पल

पल आता है पल जाता है
कल आता है कल जाता है
पल-पल कल-कल की झिलमिल में
सारा जीवन कट जाता है
कोई कली मुरझा जाती है
कोई खिलकर फूल बनी है
कोई सौ-सौ आँसू रोती
कोई सुख से भरी तनी है
पल में जीवन गया किसी का
पल में जीवन नया आ गया
पल में एक नया पल आया
बीता भूतकाल कहलाया
पल में रिश्ते बन जाते हैं
पल भर में बिगड़े या टूटे
पल भर पहले जो अपने थे
पल में उनके दामन छूटे
यूँ पल-पल का कल बन जाना
जीवन भर चलता रहता है
मानव जीवन का हर पल-छिन
जीवन भर गिनता रहता है

***

क्या है जवाब इसका

हैं कितने दर्द दिल में क्या है हिसाब इसका
झूठे हैं कितने सच्चे क्या है जवाब इसका
कितनी तरह की खुशियाँ कितने तरह के ग़म हैं
खुशियों से चमकी आँख पल भर में कितनी नम हैं
इन्सान कितने चेहरे दिन भर में है बदलता
चेहरों के जमघटे में रहता है खुद बहलता
हर दर्द छोड़ जाता चेहरे पर कुछ लकीरें
हम सोच लेते ये तो किसमत की हैं लकीरें
हम दर्द को छिपाये जीते चले हैं जाते
झूठा है या है सच्चा क्यों और को बतायें
झूठा जो दुनिया कहती हमको लगे है सच्चा
परिभाषा क्या है सच की कहते हैं किसको अच्छा
ये दर्द छिप के रहते कोनों में दिल के गहरे
हम खुद ही हैं लगाते दिल पर हज़ारों पहरे
यूँ ही गुज़रता जाता है सफर ज़िंदगी का
हैं कितने दर्द दिल में क्या है हिसाब इसका

***

मुश्किलों को सुलझाकर

कुछ मुश्किलों को भूलकर
कुछ मुश्किलों को सुलझा कर
आओ आसान कर लें
ज़िंदगी के रास्ते
दूर कर दें मुश्किलों को
क्यों जियें उनके वास्ते
ज़िंदगी तो उपहार है
ज़िंदगी वरदान है
उस अदृश्य शक्ति का
जो जीती है हमारे अन्दर
जो हम सब में साकार है
क्यों उलझ कर रह जायें
उलझनों के बंधन में
बाँध लें क्यों अपने को
क्यों इनमें लिपट कर भूल जायें
सुख के सपने को
जीवन के अनमोल क्षणों को
क्यों रखें उलझा कर
आओ जी लें ज़िंदगी
कुछ मुश्किलों को सुलझा कर

***

कैसी आधुनिकता

क्षुब्ध दग्ध विदग्ध मानस
घात प्रत्याघात सहती मानसिकता
क्षत विक्षत आहत हृदय
दिग्भ्रमित पथहीन फिर भी
ओढ़ कर तन पर लबादा
और चढ़ा मुख पर मुखौटा
जी रहा जीवन्मृतक सा
आह कैसी आधुनिकता

क्षण प्रतिक्षण भीत तन-मन
छूटते सन्दर्भ टूटते सम्बन्ध
रिश्तों में दरारें
ढूँढते अस्तित्व अपना
अहं की गहराईयों में
हो रहीं मृत भावनायें
खो गईं संवेदनायें
कौन है किसका यहाँ
किसको पुकारें
आह यह कैसी विकलता

***

शायद बात बन जाती

क्यों कभी-कभी हम
एक बात कहने में
इतनी देर लगा देते हैं कि
पल भर में ज़िंदगी का
फैसला कर देने वाली बात
ज़िंदगी भर का दर्द बन जाती है
हम सारी ज़िंदगी
पछताते हैं तड़फड़ाते हैं
काश हम ने उस समय कह दिया होता
काश हम ने वह विशेष पल न गँवाया होता
तो शायद बात बन जाती
ज़िंदगी की दिशा ही बदल जाती
क्षण भर की चूक
सदियों का दर्द बन जाती है
बनती-बनती बात बिगड़ जाती है
ज़िंदगी की रफ्तार रुक जाती है
खुद के सामने ही गर्दन झुक जाती है
काश! हम देर न लगाते
बात समय पर कह डालते
तो शायद बात बन जाती

***

वह चतुर चितेरा

खोया है उजाला क्यों इतना क्यों अँधेरा है
क्यों काले अँधेरों ने इन्सान को घेरा है
आकाश में बिजली भी छुप जाती चमक पल में
क्यों ढूँढ रही धरती है ज़िंदगी बादल में
लेकर के फटी छाती धरती सिसक रही है
क्यों रूठ गये बादल क्यों मुझसे मुँह फेरा है
मौसम की शोखियों से कोई भी न बच पाया
गर्मी ने भी जलाया सर्दी ने भी सताया
चंदा की चाँदनी को किस ग्रहण ने घेरा है
सूरज कहाँ छुपा है क्यों काला सवेरा है
हम ढूँढ लेंगे खुशियाँ आशा की हर किरण में
धरती के करिश्मों में आकाश के आँगन में
पल-पल की ख़बर रखता वह चतुर चितेरा है
इन्सान की किसमत को उसने ही उकेरा है
हम माँग लेंगे खुशियाँ उस चतुर चितेरे से
देगा वही उजाले इस घोर अँधेरे से
अँधियारे में उसी की किरणें हैं आस देतीं
इन्सान की हर साँस में उसका ही बसेरा है

***

कितना अजीब है

कुछ ठोकरें मिलीं
कुछ हादसे हुए
कुछ धोखे
कुछ विश्वसघात
कुछ तकलीफें
कुछ आघात
कुछ ग़म कुछ दर्द
चल पड़ी ज़िंदगी में
हवायें गर्म सर्द
और हमें ज़िंदगी की
कँटीली राहों पर चलना
हर हाल में रह कर
ज़िंदगी जीने का तरीक़ा
हर हाल में जीने का सलीक़ा
आ गया
ये ज़िंदगी के सिखाने का
तरीका भी कितना अजीब है

***

सौ-सौ दिये प्यार के

जल गये अन्तर में सौ-सौ दिये प्यार के
जब तेरी आवाज़ गई मुझको पुकार के
दीपक की ज्योति सी जल उठी निगाहों में
आस एक चमक उठी दर्द भरी आहों में
नेह भरी यादों के सागर उमड़ उठे
लहरों पर बैठ मेरे तन-मन लहर उठे
कैसा यह नाता जीवन में रच बस जाता है
एक स्वर किसी का जीवन संगीत बन जाता है
घूम गये पल-पल रूठने और मनाने के
झूम कर लहरा गये वो पल मनुहारों के
महक गये मन में पुष्प कच्ची कचनार के
जब तेरी आवाज़ गई मुझको पुकार के

***

तुम्हारे लिये

पी हलाहल स्वयं
तुमको दे सकूँ अमृत अगर
तो धन्य हों जीवन मरण मेरे
दे सकूँ तुमको अगर
मैं नींद सुख की
धन्य हों वो शयन क्षण मेरे
अश्रु तेरी आँख के
बरसें अगर मेरे नयन से
धन्य हो जायें नयन मेरे
अगम दुर्गम पंथ पर
बढ़ता चले तू
और तेरी राह के कंटक
मुझे मिल जायें बन्धु
धन्य हो जायें चरण मेरे
हर जनम मेरा
अगर बलिदान हो तुझ पर
तो बन्धु
धन्य हों सारे जनम मेरे

***

वो दर्द

जो दर्द मैंने उम्र भर छुपा कर रखे
जो आँसू मैंने सिर्फ आँखों के अन्दर ही रखे
ग़म के जो अहसास मैंने कभी ज़ाहिर नहीं किये
तंज के जो सदमात मैंने हँस-हँस के सह लिये
जिस तड़प की लकीरें कभी चेहरे पे नहीं दिखाईं
जिस प्यास की झलक कभी लब पे भी न आई
वो हाले जिगर जो कभी अलफाज़ न बन पाये
वो दागे जिगर जो कभी अन्दाज़ न बन पाये
वो दर्द तुमने आ कर क्यों कर दिये उजागर
घर अपना किया रौशन मेरे दिये बुझा कर
कोई क्यों किसी का विश्वास यूँ तरोड़ता है
कोई क्यों किसी से यूँ मुँह मोड़ता है
कोई क्यों किसी से रिश्ते जोड़ता है
कोई क्यों किसी से रिश्ते तोड़ता है?

***

हमदर्द

दिये जिसने हैं आँसू
मेरी आँखों में
वही भोली शक्ल से पूछता है
बता तेरे रोने का सबब क्या है?
भरे हैं जिसने ये सारे ज़ख्म
मेरे सीने में
वही मासूमियत से पूछता है
बता तेरे ज़ख्मों की दवा क्या है?
लिखे हैं जिसने दर्दे दिल, दर्दे जिगर
मेरे नसीबों में
वही भर-भर के आँखें पूछता है
बता तेरे नसीबों में इतना दर्द
किसने भर दिया है?
मेरी रग-रग में
जिसके दिये ज़ख्म समाये हैं
वही नादान मुझसे पूछता है
इन ज़ख्मों को तूने
क्यों नहीं सिया है?
बुझाये जिसने सारे दीप
मेरे घर आँगन के
बड़ा हमदर्द बन कर पूछता है
एक दिया क्यों नहीं
जला दिया है?

***

दिल से दिल तक

टूटते रिश्ते
छूटते रिश्ते
चुभते रिश्ते
रीते रिश्ते
बीते रिश्ते
खटकते रिश्ते
भटकते रिश्ते
जीते रिश्ते
मरते रिश्ते
रिश्तों के कितने हैं नाम
फिर भी रिश्ते रहते हैं अनाम
अनाम इसलिये कि
केवल नाम दे देने से
रिश्ते की डोर नहीं बँध जाती है
रिश्ते की डोर तो
दिल से दिल तक जाती है
रिश्ते सुलगते हैं
रिश्ते पिघलते हैं
रिश्ते तो दिल से दिल तक
निकलते हैं
जब एक दिल की राह
दूसरे दिल से जुड़ जाती है
तब असली रिश्ता बनता है
दिल को दिल से राह होती है
सारा ज़माना कहता है

***

बन्धु

जीवन की यह डोर
छोड़ दूँ किसके सहारे
बार बार दिल
किसी अपने को पुकारे
कोई तो हो जीवन की नाव का खिवैया
कोई तो हो जो भँवर से निकाल ले
डगमगा रही मेरे जीवन की नैया
कोई तो आ कर पाल को सँभाल ले
कोई जो राहों से काँटों को बीन ले
कोई जो फूलों से राहें सँवार दे
कोई जो अन्तर का अँधियारा दूर करे
कोई जो राहों को भर दे उजियार से
कोई जो मेरे दुखों को छीन ले
कोई जो मुझको सुख का शृंगार दे
कोई जो मेरी आँखो को पढ़ सके
कोई जो अन्दर के दर्द को पहचान ले
कोई जो समझ सके मौन की भाषा
कोई जो दिल की हर धड़कन को जान ले
मिल जाये मुझको अगर
बन्धु कोई ऐसा
तो शायद जीवन में
आयें कुछ बाहरें
छोड़ दूँ जीवन की डोर
उसके सहारे

***

बस वही इन्सान है

जब हमारे दर्द की बस
इन्तिहा होने लगी
और लहरें दर्द की जब
हद से आगे बढ़ चलीं
हमने भी अपने से कर डाले
नये कुछ वायदे
जब हमारी ज़िंदगी
चट्टानों से टकराने लगी
और तूफानी हवायें
हमको तड़पाने लगीं
सोचा हम भी बदल देंगे
ज़िंदगी के क़ायदे
जब हमारे ही उसूलों ने
हमें डाला मसल
और जब औरों की ख़ातिर
हम गए खुद से बिछड़
हमने सोचा हम करेंगे
काम हों जिनसे फायदे
पर हमारे दर्द हम पर
दूर से हँसते रहे
कुछ न कर पाये नया बस
हम त्रिशंकु बन गए
तोड़ना अपने उसूलों का
नहीं आसान है
जो निभा ले दर्दो ग़म सब
बस वही इन्सान है

***

है नहीं ऐसा सितारा

जीवन में छा गया यह कैसा अँधियारा
राह मेरी जगमगा दे है नहीं ऐसा सितारा
दो कदम जो साथ चल ले
ऐसा साथी भी नहीं है
बैठ कर दो बात सुन ले
मीत ऐसा भी नहीं है
यादों को याद कर लूँ
ऐसी यादें भी नहीं हैं
किसी अपने से कहने को
कोई फरियादें भी नहीं हैं
काश ऐसा कोई होता
जिसको दिल अपना कह पाता
जो दिन में हँसाता
रातों को सपनों में आता
कोई होता
जो अहसासों को समझता
दिल को देता दिलासा
तो शायद जीवन में जगती, थोड़ी सी आशा
साँस-साँस दर्द बनी, आँखें भी रोईं
मंज़िल भी गुम है, राह भी खोईं
कोई दे सहारा
दिल ने कितना पुकारा
राह रौशन जो करे
कोई नहीं ऐसा सितारा

***

पूजा का पुण्य

रोज़ मंदिर में दिया जलाने से
अगर मिट जाते दिल के अँधेरे
तो हम दिये ही जलाते रहते, शाम और सवेरे
मंदिर की चौखट पर
माथा रगड़ कर
पुण्य अगर सारा मिल जाता
तो सबसे पहले मेरा माथा
चौखट पर घिस जाता
भगवान को याद कर के
आँसू बहाने से पहले
अगर बहा लें आँसू
किसी के ग़म को देख कर
किसी के दर्द की दवा बन कर
किसी के ज़ख्मों के लिए
प्यार की हवा बन कर
किसी के दुख में दुखी होकर
किसी के सुख में सुखी हो कर
जिस दिन हम हटा देंगे
स्वार्थ के घेरे
उस दिन मिट जायेंगे
दिल के अँधेरे
पूजा का पुण्य हमें
उस दिन मिल जायेगा
जीवन के सत्य का
दर्शन हो जायेगा

***

जीने की आरज़ू में

मरती है रोज़ रोज़ जीने की आरज़ू में
कैसे कैसे रोग लगा लेती है ज़िंदगी
दाग़ कहीं लग जाये न दामन में हाय मेरे
डर डर के दाग़ लगा लेती है ज़िंदगी
जीना है, सबकी लिए मरना तो मुश्किल है
मर मर के जीती चली जाती है ज़िंदगी
कौन है पराया और कौन मेरा अपना है
ज़िंदगी भर सोचती रह जाती है ज़िंदगी
भूत वर्तमान और भविष्य के चक्कर में
टुकड़ों में बँट कर रह जाती है ज़िंदगी
जी जी कर मरती है मर मर के जीती है
और फिर एक दिन मर जाती है ज़िंदगी
पाँच तत्व एक बन जीते रहे बरसों
पल भर में पाँच में बिखर जाती है ज़िंदगी

***

एक दिन का लेखा

एक दिन और गुज़र गया
ज़िंदगी के गिने हुए दिन
उनके लिए
ईश्वर की ओर से निर्धारित
कुछ मधुर स्मृतियाँ कुछ कड़वाहटें
कुछ कड़वी सच्चाइयाँ कुछ कराहटें
कुछ सन्नाटे कुछ खामोशियाँ
कानों में पड़ती कुछ अनचाही सरगोशियाँ
मौत कुछ अहसासों की
घुटन कुछ जज़बातों की
कुछ आहत आस्थायें
कुछ कुण्ठित मान्यतायें
आठ जन्मों से लगते आठ पहर
ज़िंदगी जैसे गई है ठहर
चंद सुखद पलों के साथ
ढेर से दुखद पल
आज का दिन गुज़र गया
न जाने क्या होगा कल
फिर भी एक खुशी है कि
मेरे भाग्य के निर्धारित लेखे का
एक दिन का लेखा कम हो गया

***

कितनी बेबसी

इन्सान की सोच में
कितनी बेबसी है
क्यों उसे हर खुशी के पीछे
ग़म की छाया नज़र आती है
ज़िंदगी के पीछे
मौत की माया नज़र आती है
हर सुख में छिपा
दुख दिखाई देता है
हर पाने के पीछे
खो जाने का शोर सुनाई देता है
मिलन के पीछे
विरह की परछाईं झाँकती है
भीड़ में भी तनहाई
उदासी का राग अलापती है
आने और जाने के
चक्र में जकड़े हुए
ज़िंदगी और मौत के सिरे
एक साथ पकड़े हुए
जीते जाना भी
कितनी बेक़सी है

***

किसको.....

किसको भुलायें
किसको अपनायें
जीवन की उलझनें
कैसे सुलझायें
जीवन की राहें
कितनी कठिन हैं
बदलते रिश्ते
पल-पल छिन-छिन हैं
कुछ हम पर
बिजली बन कर गिरे
कुछ बरसे शीतल बादल से
कुछ को स्मृति पटल से
मिटा देना चाहते हैं
कुछ को ढूँढें हम पागल से
कुछ छूट गए
कुछ रूठ गए
कोई अतीत बन बिसर गए
कोई भविष्य का प्रतीक बन गए
कोई चुभाते रहते हैं काँटे
कोई हमारे दुख दर्द बाँटें
कुछ जो हँसायें
कुछ जो रुलायें
किसको अपनायें
किसको भुलायें

***

अनोखे दर्द

कैसे अनोखे दर्द
सहे जा रहे हैं हम
न कह सकें न सह सकें
कैसा नसीब है
अनगिन सवाल घूम रहे
दिल दिमाग़ में
पर एक भी न पहुँचा
मुँह के करीब है
जाने ये कैसी बेबसी
खामोश हम रहे
लोगों ने समझा ये तो
दिल का ग़रीब है
कह भी सकूँ न सह सकूँ
ये दर्द क्या करूँ
ये ज़िंदगी तो मेरी
अपनी सलीब है
खुद ज़ख्म जो किये हैं
भरना है खुद उन्हें
ये ज़िंदगी भी यारों
कितनी अजीब है

***

सारी ज़िंदगी

दूसरों के जीवन को
सुखी करने के लिये
बेरंग सपनों में
इन्द्रधनुषी रंग भरने के लिये
वह पिसती रही मेहँदी की तरह
सारी ज़िंदगी
उसने अपने सारे सुख भुला दिये
अपने सपने सुला दिये
दूसरों के जीवन में महक भरने के लिये
वह घिसती रही खुद को चंदन की तरह
सारी ज़िंदगी
वह गीता के अनुसार
सुख और दुख को समान मान कर
शेक्सपियर के अनुसार
संसार को रंगमंच जान कर
जीवन को जीती रही तपस्विनी की तरह
सारी ज़िंदगी
मैं कौन हूँ
मैं क्या हूँ
अपना अस्तित्व ढूँढती वह सिसकती रही
सारी ज़िंदगी

***

मुस्काई सारी दुनिया

जी लिया सदियों को लम्हों में
भर लिया लम्हों को बाहों में
सिमट गए बाहों में ढेर से सपने
पल भर में आ गए सपनों में अपने
सपनों को आँखों ने खुद में रचाया
अपनों को अन्तर ने मन में बसाया
रच गई बस गई मुस्काई दुनिया
इन्द्रधनुषी रंगों में रंग गई दुनिया
सपनों में पलभर
जो अपने मुस्काये
पलभर को ही सही
मुस्काई सारी दुनिया

***

बिना खिवैया कैसी नैया

कब आओगे मेरे कृष्ण कन्हैया
गोपियाँ ग्वाले तुम्हें पुकारें
राह निहारे नन्द रानी तोरी मैया
सूनी वृन्दावन की गलियाँ
कहाँ गये कान्हा छलबलिया
हैं उदास सब गोपी ग्वाले
रोयें गोपाला तोरी गैयाँ
बाजे ना मीठी बाँसुरिया
मुरलीधर की कहाँ मुरलिया
नहीं नृत्य की छम-छम गूँजे
सूनी पड़ी कदम्ब की छैया
जमना तट पर राधा रानी
बैठी भर आँखों में पानी
कैसे जीये बिन कान्हा के
बिना खिवैया कैसी नैया
खोये-खोये नन्द यशोदा
ये किसमत का कैसा सौदा
दे कर छीन लिया क्यों हमसे
कौन पुकारे बाबा मैया
गोकुल मथुरा वृन्दावन में
कान्हा तो है वन उपवन में
धरती के इक-इक कण-कण में
हर प्राणी के अन्तर्मन में
हर नगरी में है साँवरिया
सबका गीता ज्ञान रचैया

***

कोई तो बतलाये हमें

किसे अपना कहें यह कोई तो बतलाये हमें
कौन है दोस्त कौन है दुशमन
इसकी पहचान का गुर कोई तो बतलाये हमें
ज़हर तो रोज़ पीते रहते हैं
कहीं अमृत भी है कोई तो बतलाये हमें
ज़ख्म अपने छिपाये रहते हैं
कोई हमदर्द मिले कोई तो सहलाये हमें
सारी दुनिया के ग़म छुपा के हँसते हैं
एक काँधा मिले रोने के लिये कोई तो बहलाये हमें
दिल सुलगता रहा है बरसों से
धुँआ निकलने की राह कोई तो बतलाये हमें
जिसके आने से ज़िंदगी बदल जाये
उसके आने की ख़बर कोई सुना जाये हमें

***

आवाज़ प्यार की

दीपक अनगिनत जला डाले
पर मिटा न मेरा अंधकार
आवाज़ लगाई जिस दर पर
पाया उसका ही बंद द्वार

यह कैसा शून्य घिरा चहुँ दिशि
मिलता न कहीं भी कोई तार
जीवन की जीत कहाँ सोई
दिखती क्यों केवल हार-हार

मैं ढूँढ फिरी हूँ जग सारा
पाया न कहीं भी कोई सार
मैं उलझी खुद की उलझन में
जिसका सूझे न कोई पार

जीवन तो देन ईश की है
मुझको क्यों लगता यह असार
मैं तो बस प्यार चाहती हूँ
और देना चाहूँ प्यार-प्यार

शायद इन प्यारे झोंको से
खुल जायें सारे बंद द्वार
इक प्यार का दीपक जल जाये
मिट जाये सारा अन्धकार

***

बदल जाते हैं सब

दोस्ती और दुशमनी अपना पराया कुछ नहीं
वक़्त जब बेवक़्त हो जाता बदल जाते हैं सब
ज़िंदगी जीनी है जीते जा रहे
वरना क्या है ज़िंदगी जानें हैं सब
क्या गिला शिकवा किसी से क्या कहें
वरना जो देते हैं ग़म जान हैं सब
दर्द देते हैं दवा के नाम पर
इस दवा के ज़हर को जानें हैं सब
ज़िंदगी कितनी ग़लत कितनी सही
ज़िंदगी की चाल पहचानें हैं सब
ज़िंदगी और मौत दोनों एक से लगने लगें
ज़िंदगी के नाम से तब भी बहल जाते हैं सब
ज़िंदगी में और सुकून में दुशमनी ही दुशमनी
फिर भी सुकूँ की तलाश हुए इसको लुटा देते हैं सब
ज़िंदगी का फलसफा कोई न समझा आज तक
याद करके मौत को फिर भी दहल जाते हैं सब

***

अहसास हुआ रूहानी

हर डाल-डाल हर पात-पात पर लिखी है मेरी कहानी
मेरी अंतर की पीड़ा जाने सृष्टि का हर प्राणी
बस एक वही अनजाना है मेरे अंतर की पीड़ा से
जिसने मन के कोरे कागज़ पर लिखी थी एक कहानी
मिला एक अनजाने पथ पर एक कोई अनजाना
जिसके मुख की छवि देख अहसास हुआ रूहानी
जिसकी बातों ने अंतर का सोया भाव जगाया
जिसकी स्मरण मात्र से रातें हो जातीं थीं सुहानी
याद आईं कान्हा की सखियाँ ब्रज की वो बालायें
याद आई कान्हा की जोगन वो मीरा दीवानी
मैं अनजाने पथ की राही भूल गई सब राहें
कैसे ढूँढ पाऊँगी उसको मैं खुद से अनजानी
जिसके बिन सूने दिन रैना जीवन के सब पलछिन
जिसके बिन लगती जीवन की सब बातें बेमानी
लोग हँसें या बात बनायें पर मन भूल न पाये
नहीं जानती यह भोलापन या मेरी नादानी

***

कैसे मनाऊँ बता दो

कहते हैं तुम तो सुनते हो सबकी सदा
मेरी सुनते नहीं हो क्या मेरी ख़ता
तुम को कैसे मनाऊँ बता दो
कौन सी धुन सुनाऊँ बता दो

मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं हूँ मगर
पर तुम्हारी तरफ है मेरी हर डगर
सूने दिन रात रहते हैं आठों पहर
एक की आस रहती है शामो सहर
तुमको क्या है शिकायत बता दो
तुमको कैसे मनाऊँ बता दो

कोई इकरार न कोई इन्कार है
मुझको तेरी हर इक बात स्वीकार है
तू ही तो मेरे जीवन का आधार है
मेरा जीना तो बस तेरा दीदार है
थोड़ी कर के इनायत बता दो
तुमको कैसे मनाऊँ बता दो

कोई शिकवा शिकायत नहीं है हमें
अपने अहसास जज़्बात किससे कहें
दर्दो ग़म के ये हालात कैसे सहें
बिन तुम्हारे यूँ दुनिया में कैसे रहें
सुन के फरियाद मेरी बता दो
तुम को कैसे मनाऊँ बता दो

***

कभी न डरना दुनिया से

अब एक शपथ ले ली खुद से
है नहीं हारना दुनिया से
राहें अपनी सच्ची रखना
और कभी न डरना दुनिया से

सत्पथ पर चलने वालों पर
लोगों के पत्थर पड़ते हैं
सच्चे पथ के वो नरम पुष्प
उनको काँटों से गड़ते हैं

सुकरात ज़हर पी गये मगर
दुनिया को सत्पथ दिखा गये
ईसा भी सूली पर चढ़ कर
सद्मार्ग सभी को दिखा गये

पाण्डव सच्चाई पर चल कर
कान्हा को अपना बना गये
गीता रचने वाले कान्हा
अर्जुन के बन रथवान गये

जो हिम्मत करके है चलता
भगवान साथ देते उसका
जो निडर निःशंक आगे बढ़ता
इन्सान साथ देते उसका

ये सब उदाहरण पाये हैं
मैंने अपनी इस दुनिया में
सच्चे पथ पर चलना है मगर
न कभी हारना दुनिया से

***

न तुम करुणा दिखाओ

मैं दुखों की सेज पर सोती रही हूँ
अब न तुम करुणा दिखाओ

एक तप इक साधना में
प्रिय की आराधना में
तप्त, तृषित, अशांत में होती रही हूँ
अब न तुम डरना सिखाओ

इक तपस्वी की लगन सी
इक मनस्वी की मनन सी
मैं सदा नवदीप सी ज्योतित रही हूँ
अब न तुम बुझना सिखाओ

मैं दुखों की सेज पर सोती रही हूँ
अब न तुम करुणा दिखाओ

***

सहते रहेंगे ताउम्र

अब क्या बतायें तुमको इस दिल को क्या हुआ है
अब तक समझ न पाये हम दिल को क्या हुआ है
यूँ दिल बड़ा है भोला कुछ जानता नहीं है
सन्तोष भी बहुत है कुछ माँगता नहीं है
कोई गिला न शिकवा नाराज़गी न कोई
फिर भी न जाने किसमत जाकर कहाँ है सोई
थोड़ा सुकून दे दे अब तो यही दुआ है

करना तो चाहते थे दुनिया में हम बहुत कुछ
पर रौशनी तो सारी जल-जल के फिर गई बुझ
कोशिश हमारी कोई भी रंग क्यों न लाई
जब-जब कदम बढ़ाया तब-तब ही मात खाई
ऐसी ही ठोकरों से ये दिल बुझा हुआ है

चाहा कि सीख लें हम दस्तूर कुछ नये से
पल में जुबान बदलें और गुर भी हों नये से
लेकिन ये बेवफाई दिल मानता नहीं है
विश्वास तोड़ने का गुर जानता नहीं है
खुश रहता इतना कह कर सबको मेरी दुआ है
सहते रहेंगे ताउम्र इस दिल को जो हुआ है

***

प्यासी धरती मुसकाई

देखो कारी बदरिया आई
मनभावन अँधियारी छाई
जंगल-जंगल मंगल छाया
कूकी कोयलिया नाचे मोर
पशु पक्षी सबके मन भाया
मन पे किसी का रहा न ज़ोर

बच्चे बूढ़े और जवान
खुश हो कर सब घूम रहे
भीग रहे वर्षा फुहार में
बूँदों के संग झूम रहे

झूलों पर ये बहू बेटियाँ
झूल रहीं दे दे कर तान
सावन के गीतों को गा कर
भरतीं जन मानस में प्राण

भँवरे नाचे फूल-फूल पर
पेड़ पे चिड़ियाँ झूल-झूल कर
धन्यवाद देते प्रकृति को
प्रभु की अद्वितीय सुकृति को

ज़रा देर में गरजे बादल
बिजली ने आँखें चमकाईं
कारी बदरिया छम-छम बरसी
प्यासी धरती भी मुसकाई

***

वो रिश्ते कहाँ हैं

जो जोड़े दिलों को वो रिश्ते कहाँ हैं
ये रिश्ते तो कौड़ी में बिकते यहाँ हैं
कहीं पर है नफरत कहीं पर जलन
कहीं दूसरे की खुशी से कुढ़न
कहीं पर हैं तुलना के बादल घनेरे
कहीं लोग इक दूसरे से जलें
कोई दूसरे की हँसी से हैं कुढ़ते
सदा मूँग छाती पे उनकी दलें
किसी को है पैसे का लालच घना
कोई दूसरे के सुखों से दुखी
कोई ढूँढ लेता दुखों में भी सुख
कोई ढेर सुख में भी रहता दुखी
लिये दिल में तूफान कुण्ठा कुढ़न
जिये जा रहे लोग संसार में
कोई ढूँढ लेते हैं खुशियों का सागर
अपने ही आँगन में घर द्वार में

***

रोज़ एक आज.....

रोज़ एक दिन निकल जाता है
रोज़ एक आज कल में बदल जाता है
वक़्त का एक पल किसी को इन्सान बना देता है
किसी को देवता भी बना देता है
कभी-कभी वक़्त की तलवार चलती है
वक़्त किसी को शैतान बना देता है
कोई एक पल जो इन्सान को इन्सान बनाता है
वही कोई एक पल इन्सान को शैतान बना देता है
रेत का महल मुट्ठी में लिये
वक़्त तो नहीं बदलता कभी खुद को
इन्सान को पल-पल गुलाम बनाये जाता है
रोज़ न वापिस आने वाला पल
हाथ से बर्फ सा पिघल जाता है
सुबह शाम रात दिन बन कर
रोज़ एक दिन निकल जाता है
कब शुरू हुआ, कब ख़त्म हुआ ज़िंदगी का सफर
इन्सान देखता रह जाता है
होश आने पर कोशिश करता है पकड़ने की
एक बार फिर से मुट्ठियों में जकड़ने की
पर वक़्त तो बस हाथों से फिसल जाता है
रोज़ एक आज कल में बदल जाता है

***

आस-विश्वास और लक्ष्य

मिटने न दो विश्वास को
न धोखा देना और के विश्वास को
आस और विश्वास ही
दो शक्तियाँ जो साथ हैं
इनके बल पर काम करते
मनुज के दो हाथ हैं
बुद्धि का उपयोग भी न भूलना
साथी मेरे
बुद्धि से ही सफल होते कर्म सब
साथी मेरे
अपनी शक्ति और बुद्धि से जो लेता
काम है
वह नहीं होता कभी जीवन में फिर
नाकाम है
आस और विश्वास लेकर
सत्य पर चलते चलो
विजित कर संघर्ष को तुम
लक्ष्य पर बढ़ते चलो

***

वक़्त अपने निशाँ छोड़ता ही गया

करवटें हर एक मौसम बदलता गया
सलवटें मुँह पे आकर चढ़ाता गया
वक़्त ने भी गणित में न रखी कभी
उम्र पल-पल वो आगे बढ़ाता गया

दिन महीने बरस यूँ ही चलते रहे
वक़्त अपने निशाँ छोड़ता ही गया
हर बरस जन्म दिन हम मनाते रहे
हर बरस हमसे मुँह मोड़ता ही गया

ये मेरी ज़िंदगी-ये मेरी ज़िंदगी
ज़िंदगी तो किसी की नहीं हो सकी
लोग तो जीने की हसरत में मरते रहे
ज़िंदगी ने हसरत किसी की न रखी

ज़िंदगी का ये फलसफा अनोखा रहा
जिसको अपना कहा वो तो धोखा रहा
फिर भी साँसों से इन्सां बहलता गया
करवटें वक़्त पल-पल बदलता गया

***

अपना ही दिल है दुशमन

दिल टूटने की आहट कोई न सुन सका है
फिर भी ये दिल न जाने किसके लिये रुका है
मुझको न तज सका ये हैरान हूँ मैं इस पर
जब अपना ही दिल हो दुशमन विश्वास फिर हो किस पर
किस से शिकायतें हम अपने ही दिल की करते
कैसी ये बेबसी है जीते हैं हम न मरते
पल-पल पे अपने दिल को ये दास्ताँ सुनाई
पर दिल ये है कि इसको कुछ भी न दे सुनाई
कोई गिला न इसको न किसी से कोई शिकायत
अब भी धड़क रहा वाह कितनी बड़ी इनायत
कैसा कठोर है यह अब तक न झुक सका है
अपने ही टूटने की आहट, न सुन सका है
ये जानता है अब तो कोई न आने वाला
फिर भी ये दिल न जाने किसके लिये रुका है

***

टूटी बाँस की बाँसुरिया

सखी री मोरे श्याम नहीं आये
घन-घन घिर आये घन बदरा
बह निकला आँखों से कजरा
बरखा की हर बूँद बरस कर
अँखियों बीच समाये
सखी री मोरे श्याम नहीं आये
चम-चम चम-चम चमके बिजुरिया
मौन भई क्यों तेरी बाँसुरिया
मोरा मन घबराये
सखी री मोरे श्याम नहीं आये
झम-झम-झम-झम बरसे मेहा
छाँड़ि दिया कान्हा क्यों नेहा
याद तेरी तड़पाये
सखी री मोरे श्याम नहीं आये
राधा तोरी बन-बन डोले
पाँयन में पड़ गये फफोले
काहे मोहे तरसाये
सखी री मोरे श्याम नहीं आये
बाँस को छू कर पवन जो आये
कानों में बाँसुरी बज जाये
टूटी बाँस की बाँसुरिया
किसी काम नहीं आये
सखी री मोरे श्याम नहीं आये

***

हमारा आज

नाखूनों से माँस जुदा नहीं होता
यह कहावत एक किताब में पढ़ी
कल अख़बार में भी दो ख़बरें पढ़ीं
पहली ख़बर में एक पुत्र ने
संपत्ति के लिये पिता को मार दिया
दूसरी ख़बर में
पिता से माँ को बचाने वाले पुत्र को
अपनी प्रेमिका के लिये पिता ने मार दिया
क्या कलयुग में
रिश्तों की परिभाषा बदल गई है
नाखूनों और माँस के बीच की जगह गल गई है
गले अंग को काट देना ही अच्छा
पिता को पुत्र द्वारा और
पुत्र को पिता द्वारा मार देना ही अच्छा
कहाँ जा रहा है समाज
यह कैसा है हमारा आज
तीसरी सबसे भयंकर ख़बर में
एक औरत ने अपने प्रेमी की सहायता से
अपने पति और तीन बच्चों को
मार कर अपने ही हाथों से
दूर कर दिया अपने जीवन से
मुझे लगा मैं अख़बार, टी.वी.
बंद कर लूँ आँख, कान, सबसे
माँस जुदा हो रहा है नाखूनों से
किसी को नहीं रह गई ममता और लाज
यह कैसा होता जा रहा है समाज, हमारा आज

***

तू कहाँ सो रहा है ?

ये कुदरत को जाने क्या हो रहा है
है लगता हर तरफ कुछ हो रहा है
ये झर-झर-झर, झर रहे बादल घनेरे
या कोई बिरही गगन में रो रहा है
ये क्यों बरसा रहा है आग सूरज
ये किसके ग़म में पागल हो रहा है
बहा रहा चाँद आँसू चाँदनी में
ये दीवाना भी छिप कर रो रहा है
सागर उछल कर चंदा को छूना चाहता है
ज़मीं से आस्माँ का भी सफर अब हो रहा है
कभी टकरातीं लहरें सिर चट्टानों से जाकर
ये कैसा दर्द दिल जो टकरा के सर रो रहा है
जो लावा भरा है धरती के दिल में
वो चीर कर सीना बाहर आ रहा है
कहीं मुरझा रही फूलों से रंगत
उदासी का सा आलम हो रहा है
विमल निर्मल कुछ नहीं रह गया है
मेरा मन उलझनों में खो रहा है
ख़ुदा मेरे तेरा सिजदा करें हम
पुकारें तुझे तू कहाँ सो रहा है
ये कुदरत को जाने क्या हो रहा है
है लगता हर तरफ कुछ हो रहा है

***

जाने दिलवाला

1.

जीवन में कितनी खुशियाँ हैं
कितने ग़म कैसे जानें
जो मिलता जाता है उसको
लिखा भाग्य को हम मानें
फिर भी प्रश्न बहुत से उठते
कैसे दिल को समझायें
जीवन की इन विडम्बनाओं को
दिल जाने या दिलवाला

2.

मेरे दिल के वातायन में
बैठ मुझी पर है हँसता
फिर भी न जाने क्यों आकर
वह मेरे दिल में बसता
दिल से दिल की राह बना कर
कैसे जीना होता है
ये पहेलियाँ दिल ही जाने
या फिर जाने दिलवाला

3.

दूर पार की यादें आकर
जब दिल को हैं तडपातीं
भूत भविष्यत् वर्तमान की
सारी गिनती कर जातीं
कैसे फँसता बेचारा दिल
यादों के इस दलदल में
इस दलदल से कैसे निकले
दिल जाने या दिलवाला

बैठ कभी जब सागर तीरे
जब-जब भी मैं हूँ रोती
लहरें मुझको गले लगातीं
कभी चरण मेरे धोतीं
मेरे दिल के तूफानों को
समझें लहरें सागर की
दिल से दिल की राह बने तो
दिल की जाने दिलवाला

4.

दुनिया के सब नाते रिश्ते
छुपे हुए रहते दिल में
उनके दिये हुए सब सुख दुख
छिप कर रहते हैं दिल में
नाते रिश्ते टूट न जायें
यही लगा रहता डर सा
टूटन के इस ग़म को जाने
दिल या टूटे दिलवाला

5.

कोई मुझसे रूठ न जाये
छूटे न कोई अपना
कोई धोखा हो न जाये
लूटे न कोई अपना
लुटे हुए का छुटे हुए का
दर्द भला समझेगा कौन
इसको समझ पायेगा केवल
कोई टूटे दिलवाला

***

जीवन के साठोत्तर वर्षों में

हमारे पूर्वज सचमुच बहुत विद्वान थे
जिन्होंने जीवन को चार आश्रमों में बाँटा
और वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम में जाने को बताया
वृद्धावस्था को निराशा और लज्जा से बचाया
आज वृद्धों को कुम्भ के मेले में, किसी सड़क के किनारे
किसी चौराहे पर, किसी को बताकर और किसी को बिना बताये
वृद्धाश्रम में अपने ही बच्चे धोखे से छोड़ आये
जो घरों में रहते हैं वे भी निष्कासित से होते हैं
अपने हाल में चुपचाप छुप-छुपकर रोते हैं
घरों में वृद्धों को हो रहा है कठिन एक-एक दिन काटना
होता है मुश्किल दिन भर खुद को टुकड़ों में बाँटना
अपने ऊपर कटौतियाँ करके बच्चों को पढ़ाया लिखाया
उनको पैरों पर खड़ा किया जीवन साथी ढूँढ कर दिया
सेवा निवृत्ति होते ही साठ से इकसठ तक जाने से पहले ही
वह कुछ ही दिनों में बेकार बुड्ढा कैसे हो जाता है
जीवन कितना अकेला कितना कष्टदायी हो जाता है
साठ वर्ष का होते ही नई-पुरानी पीढ़ी का अन्तर
यकायक अत्यधिक तीव्र गति से बढ़ जाता है
नई सोच पुरानी से कितनी अलग है
पुरानी सोच कितनी लाचार और बेकार है
माँ को रसोई और घर का काम नहीं आता
पिता को नाती-पोतों से बात करना उन्हें पढ़ाना नहीं आता
खाने-पीने उठने बैठने पर कितने बंधन लग जाते हैं
बूढ़ों को मित्रों सहेलियों के सामने नहीं आना है
याद आती है 'चीफ को दावत' की वृद्धा माँ

जिसके खाँसने पर भी प्रतिबन्ध था
कहीं चीफ घर में एक बुढ़िया को न देखा ले
घर की पुरानी मालकिन सीढ़ियों के नीचे कोठरी में
पिता बाहर के बरामदे में आराम करते हैं
कोई भाई माता-पिता को एक-एक बाँट लेते हैं
कितना मुश्किल हो रहा है एक बार फिर
नई ज़िंदगी का क-ख-ग शुरू करना
सब को खुश करना चाहने पर भी
किसी को खुश न रख पाना
क्या बुढ़ापा आते ही इन्सान के अन्दर का
सारा ज्ञान समाप्त हो जाता है
साठ के बाद एक वृद्ध का अस्तित्व उसकी पहचान
और उसका आत्मसम्मान
सब समाप्त हो जाता है
जबकि बाहर उनके दफ्तर के पुराने साथी
किसी शिक्षक को उसके विद्यार्थी
आज भी मिलने पर हाथ जोड़कर नमस्ते करते हैं
कुछ आदर सहित चरण स्पर्श करते हैं
कुछ मित्र आज भी गले मिलते हैं
फिर क्या हो जाता है कि-
जो सबसे अधिक अपने
सबसे अधिक पास होते हैं
वही सबसे अधिक दूर हो जाते हैं
क्यों एक इन्सान के जीवन भर के सपने
अन्तिम समय में चकनाचूर हो जाते हैं
उसका किया हर कार्य उसका बोला हर शब्द
उसके सम्पूर्ण जीवन का सारा अनुभव
सब बेमानी हो जाता है
जीना सिर्फ एक लाचारी रह जाता है

क्या साठ के बाद इन्सान बिल्कुल नाकारा हो जाता है
सब कुछ होते हुए, करते हुए भी बेचारा हो जाता है
उसे तरसना पड़ता है दो क्षणों के साथ के लिये
वह तरसता है दो पल की मीठी बात के लिये
बीमारी में थोड़ी हमदर्दी, सहानुभूति के दो शब्दों के लिये
पूरा दिन कट जाता है शायद कोई पूछ ले बीमारी का हाल
निराशा मिलने पर हो जाता है बेहाल
दिन भर की आशा-निराशा रात भर सोने नहीं देती
जीवन भर आत्म सम्मान से जीने की यादें जी भर रोने भी नहीं देतीं
जब नई पीढ़ी की नई पीढ़ी आयेगी
तब क्या हमारी यह नई पीढ़ी हमें याद करेगी
हमारी कामना आशीष है कि उन्हें हमारे हाल से न गुजरना पड़े
न उन्हें अपने किये पर पछताना पड़े क्योंकि तब हम न होंगे
और वे अपनी ग़ल्ती सुधारना चाह कर भी न सुधार पायेंगे
चाह कर भी कोई प्रायश्चित न कर पायेंगे

***

ये दो आँखें

कितनी बातें करतीं आँखें पल पल रंग बदलती आँखें
बचपन से सुनते आये हैं दिल का दर्पण होतीं आँखें
पल में आँख भवों तक खींची पल में सीधी तिरछी आँखें
कभी प्यार ममता दिखलातीं, क्रोध घृणा दिखलातीं आँखें
भय से विस्फारित हो जायें यादों में खो जायें आँखें
दुख में तो रोती हैं आँखें खुशियों में भी रोती हैं आँखें

परिचय कभी दिखातीं आँखें कभी अपरिचित बनतीं आँखें
परिचय और परिचय का सच ही तो बतलाती हैं आँखें
कभी शून्य बन जाती आँखें कभी मदभरी होती आँखें
कभी खुशी छलकाती आँखें कभी ग़म भरी होती आँखें
झुक झुक जायें रुक रुक जायें घबराती शरमाती आँखें
कभी त्योरियाँ जब चढ़ जायें घूर घूर कर देखे आँखें

मोह भरी आँखें की भाषा बिन भाषा के बोले आँखें
छोहभरी आँखें की भाषा मन की भाषा बोलें आँखें
कभी हुकुम देती हैं आँखें कभी याचना करती आँखें
प्रभु के आगे नतमस्तक हो मगन प्रार्थना करती आँखें
पल भर में गम्भीर दिखें और पल भर में हों चंचल आँखें
पल में तोला पल में माशा बड़ी अनोखी हैं ये आँखें
सपनों की सपनीली आँखें जागे में रतनारी आँखें
कजरा से कजराई आँखें कुदरत की कजरारी आँखें
दिखलायें यादें अतीत की कभी भविष्य को खोजें आँखें
जीवन के नवरस की छटायें दिखलाती हैं ये दो आँखें
कितनी बातें करतीं आँखें पल-पल रंग बदलती आँखें
बचपन से सुनते आयें हैं दिल का दर्पण होती हैं आँखें

***